नया प्रयास

राजस्थान भू–स्थानिक डाटा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर

बिक्री के लिए नहीं

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

अंक 4 वर्ष : 2014

नया प्रयास

संरक्षक
श्री अशोक प्रिम, निदेशक, आर.जी.डी.सी.

संयोजक एवं प्रधान संपादन
श्री नीरज कुमार,अधीक्षक सर्वेक्षक

संपादन सहयोग
श्री आर.एस.मीना, स्थापना एवं लेखाधिकारी
श्री एन.एल.मीना, कार्यालय अधीक्षक
श्री श्याम सिंह सैनी, प्रवर श्रेणी लिपिक

टंकण सहयोग
श्री विनोद गुप्ता

कम्प्यूटर सैटिंग एवं सज्जाकार
श्री जी. जोन्स, सर्वेक्षण सहायक

राज0 भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
प्लॉट न0 19–20, सेक्टर–10 विधाधर नगर,जयपुर–302039

इस अंक में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त किये गये विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं, जिससे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

नया प्रयास
अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेख / रचना विवरण	रचनाकार / प्रस्तुत कर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	द्विभाषी डाटा माडॅल फॅार डिजीटल कार्टोग्राफिक डाटाबेस क्रिएशन फॅार ओ एस एम / डी एस एम	अशोक प्रिम, निदेशक	1
2.	भारतीय सर्वेक्षण विभागः वर्तमान परिदृश्य	तकनीकी अनुभाग (प.क्षे.)	3
3.	राजस्थान की हरियाली–खेजडी	शंकरलाल,अधिकारी सर्वेक्षक	7
4.	विटामिन का अर्जन	आर.एस.मीणा,स्थापना एवं लेखाधिकारी	9
5.	वृद्धजन गुणीजन बनें	सुरेश चन्द्र,प्रवर श्रेणी लिपिक	10
6.	जयपुर लिटेरेचर फेस्टीवल के हो हल्ले से दूर जतिनदास को सुनने का सुख	अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	12
7.	क्रोध–कारण एवं निवारण	अशोक कुमार छाजेड,सर्वेक्षक	14
8.	सरजार्ज एवरेस्ट–एक परिचय	शैलेष सोनी,पटलचित्रक ग्रेड–।।	17
9.	एक ईमानदार व्यक्ति,जिसे उसकी पत्नी ने बेईमान बना दिया	भंवर लाल शर्मा,खलासी	19
10.	मौत एक इन्सान की	विनोद गुप्ता, खलासी	20
11.	जीवन प्रवाह–कुछ बिन्दु	भंवर लाल प्रजापति, पटलचित्रक ग्रेड–।।	21
12.	जीवन–सार	विजय कुमार वी.श्रीमाली, पटलचित्रक ग्रेड–।।	22
13.	मातृभाषा–हिन्दी	एन.पी.एस.नेगी,अधिकारी सर्वेक्षक	23
14.	सत्संग कलिकायें	बलबीर सिंह,खलासी	25
15.	महापुरूषों की अमर सुक्तियॉ	कैलाश चन्द मीणा, पटलचित्रक ग्रेड–।।।	26
16.	हमारा राजस्थान	मदनलाल भांड,मानचित्रकार डिवी–।	27
17.	पानी प्रकृति की अनुपम देन	अशोक कुमार,अधिकारी सर्वेक्षक	28
18.	प्रेम की शक्ति	प्रेमसिहं सिनसिनवार, भण्डार सहायक	30
19.	सर्वेक्षण के रोमांचक क्षण	मार्क अगस्टिन, अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)	31
20.	व्यसन और स्वास्थ्य	हीरालाल गर्ग, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत्त)	34

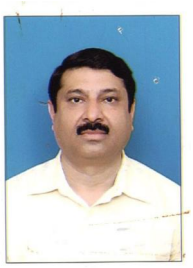

अपर महासर्वेक्षक का सन्देश

हमारी राजभाषा हिन्दी एक सरल एवं सुबोध भाषा है। राजभाषा का जन द्वारा प्रयोग राष्टीय एकता का परिचायक होता है। हिन्दी के बोलचाल तथा लेखन में उपयोग से भारतीयता का बोध होता है। इसलिये सभी भारतीयों का यह कर्तव्य है कि इसके विस्तार एवं प्रचार में अपना भरसक योगदान करें। हिन्दी के प्रचार व प्रसार में सरकारी तन्त्र की एक अहम भूमिका हैं।

यह हर्ष एवं संतोष का विषय है कि राजस्थान भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र ''नया प्रयास'' पत्रिका के माध्यम से जन प्रेरणा में अपना योगदान कर रहा है। पत्रिका का शीर्षक भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मैं ''नया प्रयास'' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके प्रशंसनीय कार्य के लिए शुभकामनाऐं देते हुए कामना करता हूँ कि ''नया प्रयास'' का प्रकाशन अनेकों नये प्रयासों को जन्म देगा तथा अन्य के लिए प्रेरणा स्त्रोत साबित होगा।

नवीन तोमर
अपर महासर्वेक्षक
पश्चिमी क्षेत्र,जयपुर

संरक्षक का संदेश

यह हर्ष की बात है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग के जयपुर स्थित कार्यालयों के अधिकारीयों और कर्मचारियों के रचनात्मक सहयोग से राजभाषा पत्रिका "नया प्रयास" पुनः प्रकाशित होने जा रही है। राजभाषा में पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में राजभाषा में लेखन को बढ़ावा देना है। राजस्थान भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र, हिन्दी में शत–प्रतिशत कार्य को बराबर बढ़ावा दे रहा है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त गर्व हो रहा है कि राजस्थान भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र में गत वर्ष की भॅाति इस वर्ष भी हिन्दी पखवाड़े का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, तथा प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। 5/6 शीटों की संख्या के हिसाब से राजस्थान भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र देश का सबसे बड़ा भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र है। अतः इस कार्यालय की तकनीकी जिम्मेदारी सबसे बड़ी है। मुझे गर्व है कि अधिकारियों और कर्मचारियों ने तकनीकी कार्य की व्यस्तताओं से समय निकाल कर रचनायें तैयार की। ये लेख रोचक होने के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक भी हैं। इस पत्रिका के संपादन से जुड़े कर्मचारियों की भूमिका अविस्मरणीय है। संपदान और प्रकाशन का कोई प्रशिक्षण लिए बिना उन्होने लीक से हटकर इस कार्य को पूरा किया। वास्तव में ये बधाई के पात्र हैं। मैं कामना करता हूॅ कि रचनाकारों एवं सपादकों की मेहनत सफल हो और "नया प्रयास" व्यापक रूप से सराही जाये।

अशोक प्रिम
निदेशक,
आर.जी.डी.सी

संपादकीय

'नया प्रयास' का नया अंक प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत गौरव महसूस कर रहा हूँ। 'नया प्रयास' का यह चौथा अंक है। यह इस बात का प्रमाण है कि इस कार्यालय ने पत्रिका प्रकाशन की निरन्तरता को बनाये रखा हुआ हुए है। राजभाषा में विभागीय पत्रिका का प्रकाशन बेहद चुनौतीपूर्ण है। विभाग के कर्मचारियों के पास अनुभवों की बहुलता तो है पर कभी–कभी अभिव्यक्ति में अवरोध आ जाता है। वे तकनीकी कार्यो को राजभाषा में उत्साह पूर्वक करतें है पर रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए कुछ अतिरिक्त प्रयास करने होतें है। रचनात्मक अभिव्यक्ति में भाषा के अतिरिक्त शिल्प की भी भूमिका होती है। शिल्प अभ्यास से आता है। जबकि कल्पनाशीलता वह गुण है जो कभी तो तुरन्त ही कोई अद्‌भुत रचना की प्रेरणा दे देती है और कभी–कभी महीनों गुजर जातें है, तब कुछ प्राप्त होता है। सर्व विदित है कि बड़े–बड़े अविष्कारों में वैज्ञानिकों की कल्पनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रिकाओं में रचनाओं के साथ–साथ आवरण सज्जा,टाईप सेटिंग आदि में भी कल्पानाशीलता का प्रभाव देखा जा सकता है। तकनीकी लेखों के साथ एक आशंका सदैव रहती है कि वे कहीं दुरूह न हो जाये। यह संतोष की बात है कि इस अंक के तकनीकी लेख इतने सहज है कि उनकी संप्रेषणीयता बनी रहती है। तकनीकी लेख के अतिरिक्त इस अंक में कई ज्ञानवर्धक और रोचक लेखों का समावेश किया गया है। पत्रिका प्रकाशन का प्रयास वैयक्तिक स्तर पर न होकर सामूहिक है। अतः 'नया प्रयास' को राजस्थान भू–स्थानिक ऑकडा केन्द्र की उपलब्धियों का प्रतिबिंब कहा जा सकता है। अंत में मै यह कहना चाहूँगां कि नाम के अनुरूप 'नया प्रयास' का यह अंक नया भी है और कर्मचारियों की राजभाषा में रचनात्मक प्रयास भी है। अतः त्रुटियों को गंभीरता से न लेते हुए आप हमारा प्रोत्साहन करते रहेगें, ऐसी हम अपेक्षा रखते है।

संपादक
नीरज कुमार
अधीक्षक सर्वेक्षक
नया प्रयास

द्विभाषी डाटा माडॅल फॉर डिजीटल कार्टोग्राफिक डाटाबेस क्रिएशन फॉर ओ एस एम / डी एस एम

भारतीय सर्वेक्षण विभाग में मानचित्रण के ओ एस एम तथा डी एस एम मानकों को अपनाने के उपरान्त स्थलाकृतिक मानचित्र के परंपरागत रूप-रेखा में परिवर्तन आया एवं साथ ही साथ मानचित्रों के उत्पादन के तरीके में बदलाव आया। इसका प्राथमिक प्रभाव नए सार्वभौम मानकों में प्रक्षेपण तथा आधार का अभिग्रहण था। इसका द्वितियक प्रमुख प्रभाव नये मानचित्र रूपरेखा तथा विन्यास में स्थलाकृतिक आकार को चित्रित करने हेतु मानचित्रण पैरामीटर में बदलाव लाना था।

स्थलाकृतिक विशेषता की आकृति के लिए आवश्यक विभिन्न बिंदुओं, रेखाओं तथा क्षेत्र की रूपरेखा के प्रतीकन के रूपांतरण मानचित्रण प्रभाव में परिवर्तन है। समय के साथ हुए सांस्कृतिक विवरणों में बदलाव को परिलक्षित करने हेतु कुछ नए प्रतीकों का विन्यास किया गया। इसका दूसरा पहलू, कुछ आकारों को उनके आस-पास के संदर्भ में प्रकाशित करना था, ताकि मानचित्र में उनकी स्पष्टता में वृद्धि लाई जा सके।

भारत का महासर्वेक्षक कार्यालय द्वारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग में अनुदेशों की श्रृंखला जारी की गई, जिसमें नये मानचित्रण पैरामीटरों में मानचित्रण आकारों को विशेष रूप से स्थान दिया गया क्योंकि इन्हें ओ एस एम तथा डी एस एम श्रृंखला के मानचित्रों में अपनाया जाता था। अभी तक एक भी ऐसा प्रलेख नहीं है जो विस्तृत रूप से मानचित्र के मानचित्रण मानकों को किसी एक प्रलेख जिसमें सभी परिवर्तन एक साथ मिलते हैं, जैसाकि ओ एस एम तथा डी एस एम श्रृंखला के मानचित्रों में चित्रित होते हैं।

ñडाटा माडॅल फॉर डिजीटल कार्टोग्राफिक डाटाबेस क्रिएशन फॉर ओ एस एम / डी एस एम नामक प्रलेख इन सभी अनुदेशों को एक स्थान पर रखने का प्रयास करता है ताकि विभिन्न परिवर्तनों के परामर्श को अधिक सुगम बनाया जा सके। यह एक मात्र ऐसा प्रलेख होगा जिसके मार्गदर्शन को आकृति चित्रण हेतु अपनाकर ओ एस एम तथा डी एस एम श्रृंखला के मानचित्रों में कार्यान्वित किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त, यह प्रलेख द्विभाषी बनाने की प्रचेष्टा है जो हिन्दी में प्रकाशित मानचित्र में आकृति की व्याख्या, उनका नामकरण तथा उनका कार्यान्वयन के लिए एक मानक का काम देगा। भारतीय सर्वेक्षण विभाग को ओ एस एम तथा डी एस एम श्रृंखला के स्थलाकृतिक मानचित्रों को हिन्दी में भी बनाने का वैद्यानिक अधिकार है। अत: मानचित्रों में स्थलाकृतिक आकारों का द्विभाषी संकलन मानचित्रकारों को उसकी सही पहचान तथा नामकरण हिन्दी में जानने में सहायक होगा। द्विभाषी आकार की सूची भारत सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करेगी जिसमें आधिकारिक प्रलेखों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रकाशित की जाएगी।

प्रलेख के अनुलग्नक ÓIIÔ में ऐसे नये आकारों की सूची दी गई है, जिन्हें ओ एस एम / डी एस एम श्रृंखला के मानचित्र में पहले के स्थलाकृतिक मानचित्रों की अपेक्षा परिवर्तित किये गये हैं।

यह पॉलीकोनिक / एवरेस्ट श्रृंखला के मानचित्रों को यूटीएम / डब्ल्यू जी एस 84 श्रृंखला के मानचित्रों में परिवर्तन हेतु प्रयुक्त प्रतीक के रूप में सहायक होगा।

आशा की जाती है कि सभी परिवर्तनों को प्रलेख में समाविष्ट किया गया हैं। इस प्रलेख को यथासंभव व्यापक बनाने की प्रचेष्टा की गई हैं। यदि कोई त्रुटि दृष्टिगोचर होती है तो वह अनैच्छिक है तथा प्रलेख में संशोधन हेतु अधोहस्ताक्षरी का ध्यान आकर्षित किया जाए ताकि अनुवर्ती प्रलेख और अधिक यथार्थ रूप में प्रकाशित हो।

अशोक प्रिम
निदेशक
राजस्थान भू-स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभागः वर्तमान परिदृश्य

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत आने वाला भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारतीय भौगोलिक/भू–स्थानिक डाटा के एकत्रण, संग्रहण तथा उसके प्रसार के लिए एक उत्तरदायी अभिकरण (एजेंसी) है। यह देश के वर्तमान वैज्ञानिक संगठनों में सबसे पुराना है जिसकी बुनियाद आज से लगभग सवा दो शताब्दी से भी पूर्व रखी गई थी। तब से अब तक यह विकास तथा रक्षा प्रयोग के लिए विविध पैमानों पर विभिन्न प्रकार के स्थालाकृतिक, भौगोलिक तथा अन्य बहुत से लोक श्रृंखला मानचित्रों के उत्पादन तथा अनुरक्षण में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। "वैज्ञानिक सर्वेक्षणों" के तहत समूहीकृत करने के साथ ही भारत सरकार ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसे अपने अनुभव को, ज्योडेटिक एवं भू–भौतिक सर्वेक्षण, प्लेट टैक्टोनिक एवं सिस्मीसिटी के अध्ययन, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन, अंटार्कटिका में भारतीय वैज्ञानिक खोजदल की सहभागिता, हिमनद विज्ञान कार्यक्रम एवं अंकीय कार्टोग्राफी और अंकीय फोटोग्रामितीय से संबंधित अन्य प्रोजैक्टों आदि क्षेत्रों में, व्यापक रूप से प्रयोग करने के लिए कहा है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग, विकास नियोजन तथा रक्षा अनुप्रयोगों के लिए सर्वेक्षणों के विनिर्देशन पर सलाह देता है और नियंत्रण व राज्य सरकार के विभागों को आवश्यक ऑकडे/मानचित्र उपलब्ध कराता है।

भारत के महासर्वेक्षक, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों हेतु सम्पूर्ण सर्वेक्षण, कार्टोग्राफिक एवं भू–स्थानिक मामलों में एक सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं।

विभाग ने 240 वर्षो की अवधि में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समृद्ध सूचनाओं को एकत्रित किया है तथा भारत को विश्व में सर्वोत्तम मानचित्रत देश बनाया है।

भू–स्थानिक डाटा, वैज्ञानिक ऑकड़ों को व्यवस्थित करने में भारत का पहला संगठित प्रयास बनने जा रहा है।

भू–स्थानिक डाटा दो तर्को/विचारों के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जा सकता हैः

(1) अनुसंधान, वाणिज्य, सुरक्षा के बहुत से क्षेत्रों में डाटा की उपयोगिता ।

(2) तेजी से उभरते हुए जी.आई.एस. एवं दूरस्थ संवेदन/भूकर (कैडेस्ट्रल) आदि क्षेत्रों में डाटा की भूमिका।

नीति में संशोधन की आवश्यकता

इस अग्रणी प्रयास के बावजूद स्वतंत्र भारत के नागरिक, भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा एकत्रित किए गए ऑकड़ो तक पहुँच के अभाव में अंसतोष व्यक्त करते आ रहे है।

हमारे इस विचार का प्रायोजन, न केवल भौगोलिक/भू–स्थानिक डाटा से संबंधित मामलों अपितु देश में जनता की निधि से एकत्रित वैज्ञानिक डाटा तक लोगों की पहुॅच की सम्पूर्ण प्रणाली में विद्यमान उन समस्याओं, जिनका हम अनुभव करते है, कि पहचान करना होना चाहिए। चूंकि सभी समझते है किः

– भारत का भौगोलिक डाटा का संग्रह वास्तविक तथा देश की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूरी तरह पर्याप्त हैं।

– ऑकड़ो की गुणवत्ता श्रेष्ठ है।

– ऑकड़ो के प्रयोग पर कुछ निश्चित प्रतिबंध हैं परन्तु प्रतिबंध, ठीक–ठीक हैं क्या इसके संबंध में काफी अनिश्चिता तथा संशय है।

– यह सराहीनय है कि इनमें से कुछ प्रतिबंध सुरक्षा दृष्टि से आवश्यक है परन्तु कुछ ऐसे है जिनका मूलाधार स्पष्ट नहीं है तथा कुछ अन्य प्रत्यक्ष रूप से अनावश्यक है और जो सामान्यतः देश तथा वैज्ञानिक समुदाय के हित को ठेस पहुॅचाते हैं।

वर्तमान परिदृश्य

ज्योडेटिक भू–भौतिकी एवं मानचित्र डाटा प्रसारीकरण पर राष्ट्रीय नीति का, इस प्रकार के डाटा के प्रयोक्ताओं की आवश्यकता तथा सुरक्षा अनुप्रयोगों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर पुनरवलोकन किया जाता रहा है। पंरतु अभी भी प्रतिबंधित नीति सार्वजनिक प्रभाव क्षेत्र में एरियल फोटोग्राफी इत्यादि के प्रवेश के मामलों की तरह उत्पादकता के प्रतिकूल सिद्ध हुई है।

हार्ड कॉपी मानचित्र एवं इसकी प्रासंगिकता

प्रत्येक चीज़ के डिजिटल होने के साथ ही हार्ड कॉपी पेपर मानचित्र अभी भी हमारे जीवन में एक संदर्भ की तरह है। मेरे लिए– मैं एक मानचित्र का शौकीन हूॅ तथा मुझे मानचित्रों से प्रेम है– यह मेरी भावनात्मक अनुक्रिया है। कुछ ऐसी निश्चित दशाए है जहॉ अंकीय या जी.पी.एस. मदद नहीं कर सकता, उदाहरण के लिए यदि मैं दूरस्थ क्षितिज पर एक पर्वत पर हूॅ तो मुझे एक मानचित्र की आवश्यकता होगी कि आखिर वास्तव मे मैं किस शिखर को देख रहा हूॅ।

मै हमेशा अकींय तकनीक/जी.पी.एस. पर पूर्णतः निर्भरता से वापस आता हूॅ मैं समझता हुॅ कि मानचित्र बहुत से प्रयोक्ताओं के लिए एक तर्कसंगत स्थानापन्न है। विशेष रूप से आपने यह सुना होगा कि लोग कार मार्गो को अपना रहे है जोकि उन्हें निर्जन स्थान पर ले गया और अगली बात जो आप जानते हैं वे अकेले रह गए/खो गए। ऐसा इसलिए हुआ कि उन्होंने मानचित्र नहीं देखा। अंकीय तकनीक/जी.पी.एस. उनको यह बता सकती है वे कहॉ है परंतु यह अलग तकनीक है कि उन्हे कहॉ जाना चाहिए था। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र भारत में अभी भी ऐसे बहुत से परिवार हैं जिनकी पहूॅच इंटरनेट तथा कम्प्यूटर तक नहीं है और वे पूरी तरह से पुस्तकों, मानचित्रों पर निर्भर हैं। अतः हरेक चीज़ को डिजिटल नही मान सकते ।

मानवशक्ति उपयोग

विभाग में मानवशक्ति पर्याप्त तथा क्षमता सम्पन्न होनी चाहिए। पूर्व में यह अनुभव किया गया है कि बहुत से प्रोजेक्ट जैसे बाढ़ समतल क्षेत्र, डी.एम.सी. पर परिणाम के अनुपात में व्यय पुरी तरह असफल रहे क्योंकि मानवशक्ति, तकनीक के उचित प्रयोग के क्रियात्मक/व्यावहारिक पक्ष के बारे में पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं थी। सैद्धांतिक अवधारणा का केवल प्रदर्शन अच्छे परिणाम नहीं दे सकता। प्रोजेक्ट पर लगाए गए व्यक्तियों की संख्या भी कार्य/प्रोजैक्ट के समय से पूरा होने के लिए महत्वपूर्ण है। यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि निजी संगठन सरकारी संगठनों से श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे प्रोजैक्ट पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की आसानी से नियुक्ति करके उनकी संख्या में वृद्वि कर सकते हैं।

भावी योजनाएं

हम निम्नलिखित को करने का प्रस्ताव रखते हैः

(1) सार्वजनिक प्रयोग हेतु बड़े पैमाने पर प्रयोक्ता भौगोलिक डाटाबेस का निमार्ण।

(2) जी.आई..एस वातावरण में प्रयोग हेतु अप्रतिबंधित सार्वजनिक श्रंखला मानचित्रों के कार्टोग्राफिक अंकीय डाटाबेस का निर्माण।

(3) एकल खिड़की से बहु–अनुशासनात्मक एजैंसियों की डाटा आवश्यकताओं को पूरा करना।

(4) राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट सर्वेक्षण प्रोजेक्ट जैसे सूक्ष्म जलविभाजक (वाटरशेड) विकास, तटवर्ती क्षेत्र प्रबंधन, भूकर सर्वेक्षण, सिचांई एवं बहुमुखी योजनाओं आदि का प्रारम्भ करना।

(5) ज्योडीय एवं सम्बद्ध भू–भौतिक सर्वेक्षणों टोपोग्राफिकल सर्वेक्षणों अंकीय कार्टोग्राफी आदि में परामर्श।

(6) सार्वजनिक निजी सहभागिता

(7) किए जा रहे किसी प्रोजैक्ट की सफलता उसके कार्यान्वयन में प्रयोग की जाने वाली पद्धति पर निर्भर करती है। कार्य की बहुत सी प्रणालियॉ हैं परंतु पी.पी.पी. (सरकारी निजी सहभागिता) मॉडल एक सबसे सफलतम प्रणाली है। कार्य के इस मॉडल में सरकारी कार्यालय की क्षमता तथा निजी संगठन की कार्यप्रणाली का लचीलापन दोनों सम्मिलित होते है। दोनो भागीदारों से सहयोगी ढंग से कार्य करने की आशा की जाती है।

(8) एक सुविचारित कार्यकारी मॉडल जोकि दोनों पार्टियों के बीच विभिन्न कार्यो को चिह्नित करता है, बहुत ही प्रभावी पाया गया है।

(9) भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा फोटोग्रामितीय आदि का प्रयोग करते हुए मानचित्रों को बनाया जा सकता है जबकि उनका संशोधन तथा उससे व्युत्पन्न मानचित्र संबंधी कार्य निजी फर्मो को दिया जा सकता है। एक निजी फर्म के पास –

पर्याप्त मानवशक्ति हो सकती है पंरतु सॉफ्टवेयर या अन्य उपकरण नहीं हो सकता हैं।

(10) हमारे पास नए प्रोजैक्ट हो तथा राज्य सरकारों को प्रोजैक्टों पर सलाह दे सकते है।

(11) भारत सरकार ने पहले ही भारत के प्रत्येक नागरिक को एकल नम्बर आंबटित करने के लिए बनाया गया है। यह प्रणाली जी.पी.एस. निर्देशांक पर आधारित होनी चाहिए। एक दिन भारत के किसी भी स्थान के प्लॉट/बिल्डिंग को इंटरनेट पर देखना संभव होगा। भारतीय सर्वेक्षण विभाग/एन.एस.डी.आई. को उसकी नई विकसित भूमिका हेतु उसको भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपने नाम के वास्तविक अर्थ को सार्थक करते हुए भारत की सम्पूर्ण धरती/सम्पत्ति धारकों से सीधे जुड जाएगा। सम्पत्ति डाटाबेस विश्वसनीय रूप से बहुत सी योजनाओं को भू–अधिग्रहण तथा करारोपण के साथ उपयोगी आगत समय से उपलब्ध कराएगा।

संक्षेप में भारतीय सर्वेक्षण विभाग एक डाटा सर्जक के रूप में, सरकार की अनुमति पर तथा पहचान किए गए विभिन्न वाणिज्यिक तथा विकासात्मक प्रयोजनों के लिए डाटा की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कार्टोग्राफिक डाटा के प्रसार में रूचि रखता है। यह सही है कि डाटा के निर्माण/सृजन की लागत अधिक होती है परन्तु इसका प्रसारीकरण निःसंदेह उस कीमत पर ही किया जाएगा जो कि डाटा की सटीकता तथा विषयवस्तु के समानुपात में होगा।

तकनीकी अनुभाग,
पश्चिमी क्षेत्र कार्यालय,
जयपुर

राजस्थान की हरियाली–खेजड़ी

खेजड़ी को कई नामों से जाना जाता हैं जैसे जॉट, शामी, कल्पतरू इत्यादि। कल्पतरू का मतलब हैं वृक्ष जिससे सारी इच्छाऍ पूरी होती हैं। रेगिस्तान, जहॉ हरियाली का नामों–निशान नहीं होता, यह गोंद, सब्जी, फल, चारा, लकड़ी, खाद तथा छाया सब प्रदान करता हैं। शायद यह दुनिया का एक मात्र पेड़ हैं जिसकी छाया में बाकी पौधे खूब फलते–फूलते हैं।

खेजड़ी–एक वृक्षः– मध्यम आकार का यह पेड़ साल भर हरा रहता है। इसकी पत्तियॉ छोटी–छोटी होती हैं। कम वर्षा तथा उच्च तापमान में जहॉ बाकी पेड–पौधे सूख जाते हैं, खेजड़ी ज्यों की त्यों खड़ी रहती है। बल्कि उच्च तापमान में यह ज्यादा फलती–फूलती हैं इसकी जड़े बहुत गहरे तक नीचे जाती हैं। उपलब्ध ऑकड़े कहते हैं कि खेजड़ी की जड़े करीब 35 मीटर गहरी जा सकती हैं।

खेजड़ी–रेगिस्तान का कल्पतरूः– खेजड़ी मिट्टी में नाइट्रोजन जमा करती हैं। इस प्रकार पौघों को नाइट्रोजन उपलब्ध होती हैं। इसकी पत्तियॉ मिट्टी में ऑग्रेनिक अंश बढ़ाती है। इससे वर्षा का पानी आसानी से अवशोषित हो जाता है। खेजड़ी की जड़ों का जाल मिट्टी को बॉधे रखता है। रेगिस्तानी हवाऍ जहॉ मिट्टी को एक स्थान से दूसरे स्थान उड़ाती रहती हैं, खेजड़ी उन्हें रोकती हैं अतः मृदा संरक्षण में भी यह उपयोगी भूमिका निभाती हैं।

रेगिस्तान, जहॉ पेड़ों की कुछ प्रजातियॉ ही उपलब्ध हैं, खेजड़ी गर्मी की तपन से किसानों तथा पशु–पक्षियों को शीतल छाया प्रदान करती है। इसकी पत्तियॉ पशु बड़े शौक से खाते हैं। एक पूरी उगी हुई खेजड़ी से करीब 60 किलो चारा मिलता हैं। इसके फलियॉ लगती है, जिन्हे सांगरी या खोखा कहा जाता हैं। कच्ची सांगरी की सब्जी बनती है। इसे सुखा कर वर्ष भर काम में लिया जा सकता हैं। सूखी सांगरी बाजार में 250–350 रूपये प्रति किलो तक बिकती हैं। कच्ची तथा पकी हुई फलियॉ जानवर तथा मनुष्यों, सभी के उपयोग की हैं। इसकी लकड़ी उच्च क्वालिटी का ईधन हैं। छोटी लकड़ियॉ खेतों के मेड़ बनाने के काम आती हैं। इसकी लकड़ी का उपयोग इमारती लकड़ी के रूप में भी होता हैं। खेती के उपयोग में आने वाले औजार भी इसी लकड़ी के बने होते हैं।

खेजड़ी–औषधीय उपयोगः– खेजड़ी के फूलों को कूटकर चीनी के साथ लेने पर गर्भपात को रोका जा सकता है। खेजड़ी से गोंद मिलता है, जो कि बहुत पौष्टिक होता है। सॉप के काटने पर इसकी छाल का प्रयोग किया जाता हैं इसकी पत्तियों का उपयोग तंत्रिका तंत्र से सम्बन्धित दवाईयॉ बनाने में होता है। पत्तियों का घुँआ ऑखों से सम्बन्धित रोगों के उपचार में बहुत सहायक हैं।

वैदिक काल में पवित्र अग्नि (हवन) में खेजड़ी की लकड़ी का उपयोग होता था। लंका पर चढ़ाई से पूर्व भगवान राम ने खेजड़ी के वृक्ष की पूजा की थी। अज्ञातवास के दौरान पॉडवों ने खेजड़ी की पूजा कर अपने अस्त्र–शस्त्र इसके कोटर में छुपाए थे।

करीब 250 वर्ष पुर्व राजस्थान के जोधपुर जिले के खेजरोली गॉव में 363 लोगों ने खेजड़ी बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान की थी। इनका नेतृत्व श्रीमती अमृतादेवी विश्नोई ने किया था। यह राजस्थान के लोगों की पर्यावरण सम्बन्धित जागरूकता की मिसाल है। उन्ही की याद में भारत सरकार हर वर्ष अमृतादेवी विश्नाई वन्य जीव संरक्षण राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करती हैं।

प्रसिद्व पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलाल बहुगुणा खेजरोली गॉव प्रति वर्ष आते हैं। वे उसे एक तीर्थ स्थान मानते हैं।

<u>खेजड़ी– विलुप्त होती प्रजातिः–</u> खेजड़ी रेगिस्तान में जीवन का मूल आधार हैं। यह यहॉ की पासिस्थितिकी की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है। रेगिस्तान का यह स्वर्णवृक्ष आज विलुप्त होने के कगार पर है। यह कल्पतरू अन्तिम सांस ले रहा हैं, केवल 15ः बची है। इसके प्रमुख कारण हैं, अंधा–धुन कटाई, गिरता भू–जल स्तर तथा विदेशी प्रजातियों के वृक्ष जैसे–इजाराइली बबूल, सफेदा जैसे पेड़ों को प्राथमिकता। आज वह अपने आपको बचाने के लिए संघर्षरत हैं। यदि बचाव के कारगर कदम नहीं उठाऍ गये तो यह कल्पतरू लुप्त हो जाएगा।

(शंकर लाल)
अधिकारी सर्वेक्षक
आर.जी.डी.सी., जयपुर

विटामिन का अर्जन

एक दिन हमारे एक परिचित सज्जन बाग में टहलते मिल गये। वे बहुत कमजोर लग रहे थे। मैंने पूछा क्या स्वास्थ्य ढीला चल रहा है। यह सुनते ही वे रो पड़े। बोले मुझे विटामिन चाहिये। मैंने कहा बाजार से खरीद लो। तब वे बोले जिस विटामिन की मुझे जरूरत है, वह बाजार में नही मिलता। मैंने पूछा–तो कहां मिलता है ? वे झट से बोला बैंक में। मुझे आश्चर्य हुआ कि भारतीय बैंक का भी जबाव नहीं। पहले लेन–देन करते थे। फिर बीमा बेचने लगे। थोड़े दिन में अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए साबुन–सोड़ा बेचने लगेंगे।

क्या बैंको ने विटामिन की गोलियां भी बेचनी शुरू कर दी ? उन्होनें कहा नहीं। मेरे लिए पैसा ही विटामिन है। मैं अपनी बुद्धिहीनता पर शर्मिन्दा हो गया। मैने कहा–माफ करना, मेरी समझ इतनी ही है। मुझे बिल्कुल पता नही था कि आजकल विटामिन की जगह पैसे ने ले ली है। मैं तो आजकल भी विटामिन के लिए हरी सब्जियॉ, नीबू, आंवला, मूली, गाजर आदि खाता हूॅ।

मेरी बात सुनकर पहली बार ढंग से हंस कर वह कहने लगे तुम अब भी पिछली सदी मे ही जी रहे हो। अरे, अब तो पैसे ही प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाड्रेट हो गया है। मैंने पूछा–आजकल जो लोग हड्डे–कड्डे धूर्तजी के पड्डे नजर आते है, वे क्या पैसा खाते है ?

उन्होनें मुस्करा कर कहा " और नहीं तो क्या ? आजकल बड़े–बड़े नेता सत्ताधारी सभी ने पैसा खाना शुरू कर दिया। ब्रेकफास्ट से लेकर डिनर तक यही चलता है। मैंने कहा" सुना है ज्यादा खाने से कब्ज हो जाता है। वे बोले हॉ पैसा हजम करने के लिए वे चूर्ण भी लेते हैं। मैंने पूछा क्या त्रिफला चूर्ण ? वे बोले–त्रिफला तो हमारे जैसे सामान्य जीवों के लिए हैं। असाधारण जीव तो पूजा–पाठ का चूर्ण लेते हैं। वे समय–समय पर ग्रहों की शांति के लिए आयोजन करते हैं। कथा करवाते हैं, बस उनका खाया पिया सब पच जाता है।

मैंने कहा–सचमुच भाईजी, हम तो बड़े बावले है। जमाना कहॉ से कहां पंहुच गया और हम अभी भी दाल–रोटी के पीछे ही पड़े है। वे बोले तुम क्या ? इस देश के करोडों लोगों को यह पता ही नही कि आजकल नोटों से विटामिन मिलता हैं। मैंने पूछा– वे लोग पैसे को खाते कैसे होगें ? क्या उनका हलवा बनाते है ? उन्होनें किचिंत क्रोध की मुद्रा में कहा–तुम तो पूरे उल्लू ही हो। अरे पैसा खाने वालों के दो तरह के दांत होते है।

मैंने कहा– अभी तक तो हमने सुना है कि हाथी के दो तरह के दांत होते है। खाने के और दिखानें के और। वे बोले– कहॉ ये, सत्ता के सफेद हाथी। ये हाथियों के भी हाथी है। हाथी तो फिर भी एक दो मण से संतुष्ट हो जाता है, पर इनका पेट तो कभी भरता ही नहीं। हमेशा ही चरते रहते हैं। हमने कहा आपको यह बीमारी कैसी लगी। वे बोले मैं भी इनके फेर में आ गया, जिसके चक्कर में आया, वह अब सत्ता से बाहर है।

आर.एस.मीणा
स्थापना एंव लेखाधिकारी
आर.जी.डी.सी., जयपुर

वृद्धजन गुणीजन बने

1. आपका बुढ़ापा रसभरे पके आम की तरह होना चाहिए जिसमें सारे पौष्टिक गुण हो, क्योकि स्वाभाविक परिपक्व अवस्था ही बुढ़ापे की निशानी है। आपके पके चांदी से घ्वल केशों को देखते ही अनुभवी गुणों का रसास्वादन के लिए आतुर लोगों का समूह आपके आस–पास ललचातें हुये रहें।
2. याद रखे वृद्धावस्था की परेशानी में परिजनों से बातचीत में भुनभूनाएं नहीं, बल्कि मीठी–मीठी आवाज में बतियाएं ताकि ऐसा महसूस होने लगे की आप जीवन से खुश होकर मधुर गीत गुनगुना रहे हैं। फिर देखिऐं परिवार व समाज में तारीफ होने लगेगी, लोग हर कार्य में आपका सहयोग के लिए दौड़कर आयेंगे।
3. जिस प्रकार जन्म–मरण, बचपन–जवानी, सुख–दुःख आदि जीवन के अनिवार्य सोपान है इसी प्रकार वृद्धावस्था को टाला नहीं जा सकता अतः इससे घबराना नहीं चाहिएं।
4. दोस्तो, प्रथम 25 वर्ष का समय आपने खेल–कूद, अघ्ययन–मनन के लिए, 26–60 वर्ष धन कमाने, परिवार का भरण–पौषण के संधर्ष और नियादारी में गुजर जाते है। बचपन व जवानी के दिन जीने के बाद इनके पुनर्मूल्यांकन का श्रेष्ठ समय बुढ़ापा आ चुका है। अतः वृद्धावस्था को आप समाज के पुण्यार्थ में समर्पित कर दे। इस अवस्था को भूलकर भी स्वयं भोग के लिए उपयोग नहीं करें, क्यों कि आप बाबा, दादा, नाना आदि बन जाने पर आपको दादागिरी का त्याग कर दुनियादारी से दूर रहने की नीयत से सरल साधु जैसा जीवन स्वीकार करना ही सुखी जीवन का आधार स्तम्भ है।

हमें बुढ़ापे को अभिशाप नहीं वरदान बनाने का प्रयास करना हैः–

(1) त्यागः– ज्यों ही बुढ़ापा की दस्तक कानो में सुनाई दे, काम, क्रोध, लोभ व मोह की मखमली चादर छोड़कर उठ चलें, और धीरे–धीरे तमाम सांसारिक बंधनों से मुक्त रहने का अभ्यास शुरू कर दें।

(2) प्रेरणाः– यदि इस अवस्था में आप विधुर है तो दूसरी शादी की सप्तपदी की तैयारी करने के बजाय समाज में श्रेष्टपदवी पाने के लिए आप महावीर, बुद्ध, सन्त रैदास जैसे संतो के जीवन से प्रेरणा लें, जिन्होंने समस्त भोगो को त्याग कर पूर्ण शान्ति का साक्षात्कार किया।

(3) अनाशक्तिः– बुढ़ापें में परिवार के सदस्यों व भौतिक वस्तुओं के प्रति तटस्थ रहे, इनसे जुड़ी तमाम हानि–लाभ या मोह–माया के आकर्षण को कम करते रहना चाहिए मै कहना चाहूंगा कि प्रत्येक व्यक्ति यह प्रतिज्ञा कर लें कि "मैं 60 वर्ष की आयु में सारे दंद–फंद के मक्कड़जाल से बाहर निकल कर बाकी का जीवन दूसरों की भलाई के लिए अर्पित कर दूंगा", ताकि आप समय रहते संकट भरे जीवन से बाहर जा सकते है। जीभ के स्वाद के प्रति अनाशक्त रहे सदैव सात्विक सादा भोजन में रूचि, सत्संग, भजन–मनन में अधिक ध्यान लगाने का अथक प्रयास करे जिससे भावी जीवन मंगलमय हो सके।

(4) सक्रिय रहेः— बुढ़ापे मे जीवन को निष्क्रय न होने दें, स्वयं के अधिक से अधिक काम खुद निपटाने की कोशिश करें, आत्म निर्भर रहे। इसके अतिरिक्त समय में आप प्रौढ़ो को शिक्षित करने जैसे समाज सेवा के काम निस्वार्थ भाव से सम्पन्न करें।

(5) मुस्कराते रहेः—बुढ़ापे में जिंदादिली जीवित रहने की निशानी है। "रोता हुआ सुंदर बच्चा बुरा लगता है जबकि हॅसता हुआ कुरूप बृद्ध भी सुंदर दिखता है" इसलिए भूलकर भी मन पर मायूसी नहीं छाने दें। आपका खुशहाल जीवन देखकर स्वर्ग का देवता भी आपके साथ रहने की इच्छा प्रकट करें, फिर आपका बुढ़ापा सफल है।

(6) पीड़ित के आसू पीयेंः— "पर हित सरस धरम नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई" बुढ़ापे में दूसरों के सामने रोना नहीं रोएं, आपको अन्य पीड़ितों के छलकते आसुओं को अपनी अंजली में ले जिससे की रोता हुआ आने वाला हॅसता हुआ लौटे और पुनः आपके पास हॅसता हुआ आए।

(7) मीठा बोलेंः— दुनिया में वाणी का रस सबसे अमूल्य है। "तुलसी मीठे वचन ते रस उपजत चहूं ओर" वृद्धावस्था में परिजनों से मीठे स्वभाव में वार्तालाप करें जिससे वे भी आप से नम्र वचनों का प्रयोग जरूर करेंगे। परिवार में सामंजस्य बनाने के लिए भूलकर भी कड़वाहट भरे शब्दों को जुबान पर नहीं लाएं। याद रखे बुढ़ापें में दोनों हाथो से दान, दिल से दया और जुबान से मिठास बरसते रहें। जीवन में कम बोले मीठा बोलें, सतसंग की तलाश में डोले।

(8) इज्जत बनाएं रखेंः— बुढ़ापे में कोई ऐसा कदम न उठायें जिससे आपके परिजनों को दूसरे के सामने नजरे नीची करनी पड़े। खान—पान को संयमित रखे, इस अवस्था में अभावों को तपस्या समझें, मित्तव्ययी बने, इन्द्रियों का दास नही बने जाने की कल्पना की रिहर्सल आरम्भ करें, जिसे देखकर सारा समाज कहें कि आप वास्तव में स्वर्ग में जाने के योग्य है, तो समझ लिजिएं आप जीते जी स्वर्ग में निवास कर रहे है, इसे ही स्वर्ग में निवास का प्रमाण—पत्र मानें।

(9) स्वाद व परनिदां पर काबू करेः आपने लम्बे समय से दुनिया के अच्छे—बुरे सभी लोगों के साथ रह कर बहुत सीखा है। लेकिन कटु सत्य के अनुभव, जिनसे निंदा वाले प्रसंगो को भुलने की कोशिश करे बुढ़ापा बचपन का पूर्वागमन माना जाता है अतः जीभ के स्वाद में पड़कर शरीर को रोगों का अड्डा नही बनने देवें।

(10) देना सीखेः चेहरे की झुर्रिया ओर बालों की सफेदी तक के सफर में न जाने कितने खट्टे—मिठ्ठे अनुभव रूपी ज्ञान के भण्डार को आपने समेट रखा है इसे छोटों में निरन्तर बांटते रहे, बॉटने से बढ़ते जायेगें वरना सड़कर बदबू देने पर बेकार साबित होगें, क्योकि एक दिन यहॉ से विदाई निश्चित है।

सारांश यह है कि बुढापें को अभिशाप नहीं समझे इसे स्वयं तथा दूसरों के लिए बरदान बनाने की तमन्ना के उद्देश्य से कार्य करे। बालों को काला करके आप बुढ़ापे से बच नही सकते। फिर क्यों इनकी ध्वलता को दागदार कर रहे है। वृद्धावस्था में आप किसी न किसी रूप में समाज की सेवा करते रहेंगें तो मेरा विश्वास है कि आप समाज की नजरों में इस जीवन में और जीवन के बाद भी आदरणीय रहेंगें।

सुरेश चन्द्र,
प्रवर श्रेणी लिपिक

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के हो हल्ले से दूर जतिन दास को सुनने का सुख

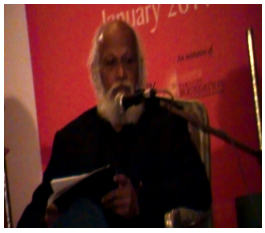

अरूण कुमार , अधिकारी सर्वक्षक

यदि किसी से पूछा जाये कि बाईस जनवरी सन दो हजार ग्यारह को जयपुर में कला एवम संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या थी तो वह तपाक से बोलेगा – जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल! 23 जनवरी को प्रकाशित जयपुर के सारे अख़बार भी यही कह रहे थे। शायद जयपुर के चित्रकारों को भी यह बात मालूम न हो (यदि मालूम रहती तो वे वहॉ उपस्थित रहते ही?) कि लिटरेचर फेस्टिवल के हो हल्ले से दूर जयपुर के सांस्कृतिक स्थल जवाहर कला केन्द्र (जेकेके) के रंगायन सभागार में विश्वविख्यात कलाकार जतिन दास ने 'ट्रेडिशनल एण्ड कंटम्परेरी इडियन आर्टस' पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया, वह भी हिन्दी में। खुद मुझे भी कहॉ मालूम थी यह बात। हॉ कुछ दिन पहले (जब लिटरेचर फेस्टिवल का तामझाम शुरू न हुआ था) अखबारों में पढ़ा था कि जेकेके में 21 जनवरी से जतिनदास के चित्रों की प्रदर्शनी लगने वाली है और मैंने तय किया हुआ था कि रविवार दिनॉक 23 जनवरी को लिटरेचर फेस्टिवल में विनोद कुमार शुक्ल जो को सुनकर वहीं से जेकेके निकल जाऊॅगा परन्तु अपर्णा को नीयत ताड़ते देर न लगी और कहा कि मैं निकल जाऊॅगा तो वह रह जायेगी लिहाजा आज ही (22 जनवरी) जवाहर कला केन्द्र चलो। तब हम लोग उस दिन शाम को जवाहर कला केन्द्र पहुॅचे। लिटरेचर फेस्टिवल की वजह से हमेशा खचाखच भरा रहने वाला जेकेके का कॉफी हाऊस उस दिन खाली खाली सा था। हॉ, जेकेके के रॅगायन सभागार के सामने कुछ लोग अवश्य खड़े थे। ऐसा तभी होता है जब वहॉ या तो नाटक होने वाला हो या कोई पुरानी क्लासिक फिल्म प्रदर्शित की जाने वाली हो। जिस बात की सूचना नोटिस बोर्ड पर चस्पॉ कर दी जाती है। मैंने उत्सुकतापूर्ण नोटिसबोर्ड को देखा तो उससे भी ज्यादा उत्तेजनापूर्ण सूचना चस्पॉ थी–' जतिन दास का व्याख्यान , शाम 5:30 पर रंगायन सभागार में'। जतिन दास की कलाकृतियों को देखना तथा उन्हे सुनना दोनों अलग अलग अनुभव है। जतिन दास ही क्या, किसी भी कलाकार को सुनना दुर्लभ ही होता है। हम जगह पर कब्जा करने के उद्देश्य से सभागर में भागे तो यह देख कर दंग रह गये कि सभागार में मुश्किल से बीस लोग थे और सभागार में जतिनदास जी उन लोगों से अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे। हमें देखते ही बोले आईये आईये बैठ जाईये। पता नहीं जतिन दास को क्या महसूस हो रहा हो पर इतने कम लोगों को देख कर मुझे बहुत कोफ़्त हो रही थी। जयपुर में आये दिन चित्रों की प्रदर्शनियॉ लगती है जिससे पता चलता है कि यह शहर छोटे बड़े चित्रकारों से अटा पड़ा होगा। तो क्या उन्हे इतने बड़े चित्रकार को सुनने का समय नहीं है? या जरूरत नहीं है? आयोजको ने सफाई भी दी कि उन्होने सारे अखबारों को सूचना दी थी पर किसी ने छापी नहीं थी (क्योकि उस दिन सभी स्थानीय दैनिक, लिटरेचर फेस्टिवल में शिरकत कर रहे जावेद अख्तर और गुलजार आदि के खबरो से भरे पड़े थे) आयोजकों ने यह भी बताया कि उन्होने सारे स्कूल कालेजों कों सूचित कर दिया था क्योंकि यह व्याख्यान कला के विद्यार्थियों के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी। पर जो कुछ भी हो, यह हमारा सौभाग्य था कि इतने कम लोगों के बावजूद जतिन दास ने अपना व्याख्यान गर्मजोशी से दिया।

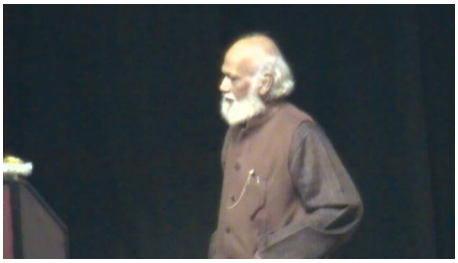

जतिन दास के व्याख्यान में उनकी मुख्य चिन्ता कला के एकेडिमिक प्रशिक्षण को लेकर थी। उन्होने कहा कि कला सर्वव्यापी है जबकि विद्यालयों में इसे दायरे में बॉधना सिखाया जाता है और कलाकृतियों के प्रदर्शन के लिये गैलरियों में जगह निर्धारित कर दिया गया है। प्रशिक्षुओं को लोक कलाओं की विस्तृत जानकारी नहीं दी जाती है। शुरूआत में ही एक्केलिक थमा दिया जाता है जबकि प्रारॅभ में उसे पारंपरिक कलाओं को पारंपरिक तरीके से करने का अभ्यास करना चाहिये। कला के विकास के लिये साधना आवश्यक है जबकि लोग विद्यालय से निकलने के बाद बाजार में घूमने लगतें हैं और अपने काम का मूल्यॉकन उसके दाम से करने लगतें हैं।उन्होने दुख व्यक्त किया कि कला की अन्य विधाओं जैसे साहित्य संगीत का मूल्यॉकन उसके सौन्दर्य शास्त्र के हिसाब से होता है जबकि चित्रकला में उसी चित्र को श्रेष्ठ मानने का रिवाज़ हो गया है जिसकी बोली ज्यादा लगती है। यह स्थिति कला के लिये अत्यन्त घातक है। उन्होने कहा कि आजकल कला के क्षेत्र में विलगाव की भी घातक प्रवृत्ति देखी जा रही है । साहित्य के लोग चित्रकला की बात नहीं करतें हैं चित्रकार साहित्य नहीं पढ़ता। संगीत वालो की अपनी अलग दुनिया होती है। जबकि पहले ऐसा नहीं होता था। कई चित्रकार अच्छे कवि भी थे और कई कवि अच्छे चित्रकार भी रहे हैं। राष्ट्रपति भवन की जिसने आर्किटेक्टिंग की थी वह आर्क्टिेक्ट नहीं, बल्कि एक चित्रकार था। जतिन दास ने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल पर कटाक्ष करते हुये कहा कि मेले के हो हल्ले के बीच कवि अपना कविता पाठ करता है वह किस काम का? जबकि कविता पाठ के लिये एक अलग माहौल चाहिये होता है। जतिन दास ने कला सीखने वालों को एक मूलमन्त्र बताया ' लर्न– अनलर्न–क्रियेट'। अर्थात पहले सीखो, फिर जितना सीखा है वह भूल जाओ और अपना सृजन करो।जतिन दास का व्याख्यान लगभग आधा घन्टा चला। उसके बाद उन्होने अपने चित्रों का स्लाईड शो किया तथा सभागार में उपस्थित लोगो से विनोदपूर्ण शैली में अनौपचारिक बातचीत भी करते रहे। स्लाईड शो के बीच उनके मुॅह से वाह वाह निकल जा रहा था तो एक ने विनोदपूर्ण तरीके से उन्हे टोका तो उन्होने जवाब दिया कि जब बनाई थी तब उतनी अच्छी नहीं लग रही थी, अब लग रही है तो तारीफ कर रहा हूॅ। उन्होने एक और मजेदार बात बताई कि वे एक बढ़िया कुक भी हैं। एक कलाकर कोई भी काम करेगा तो पूरे मनोयोग से करेगा। इसलिये ज्यादातर कलाकार खाना भी बढ़िया बनातें हैं।

दुर्भाग्य से इतनी महत्वपूर्ण कलात्मक गतिविधि की रिपोर्टिगं के लिये आयोजको द्वारा निमंत्रित किये जाने के बावजूद एक भी पत्रकार सभागार में उपस्थित न था। मुझे सन्तोष इस बात का है कि हाल ही में खरीदे गये अपने सस्ते साधारण हैडींकैम से मैंने व्याख्यान की शतप्रतिशत रिकार्डिगं कर ली है। यह ऐसी अमूल्य निधि है जिसे सबको बॉट कर खुशी होगी। इस हैडींकैम का भविष्य में इससे बेहतर इस्तेमाल शायद ही हो। पर धन्यवाद की पात्र तो पत्नी अपर्णा ही रहेगी जिसने उस दिन जवाहर कला केन्द्र जाने का हठ किया था।

———————— *अरूण कुमार , अधिकारी सर्वक्षक*

क्रोध – कारण एवम् निवारण
(गुरूवर महोपाध्याय ललित प्रभ सागर जी की व्याख्यान माला में)

क्रोध हमारे भीतर उठने वाला एक ऐसा संवेंग है जो क्षण भर में जगता है और क्षण भर में शान्त हो जाता है । क्रोध में मनुष्य अपने होश हवाश खोकर ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ आवेश तथा आक्रोश में आकर ऐसा गलत निर्णय या कार्य कर बैठता है । आत्म विवेक जागने पर उसके हाथ पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं बचता।

व्यक्ति तीन तरह का क्रोध करता है :–

(i) अल्पकालिक क्रोध
(ii) अस्थाई क्रोध
(iii) स्थाई क्रोध

अल्पकालिक क्रोध अल्प समय का होता है व्यक्ति को बस दो मिनट के लिए जैसे पानी में बुलबुला उठता है जैसा क्रोध आता है । ऐसे व्यक्ति कभी भावुक तो कभी कठोर हो जाते है।

जिसे मैं अस्थायी क्रोध कहना चाहता हूँ वह क्रोध भी अल्प समय का ही होता है इसमें व्यक्ति को क्रोध दो–तीन दिन तक रहता है व्यक्ति सोचता है कि कोई उसे मनाने आए या कोई उसे ैवततल कहे।

तीसरी प्रकृति होती है स्थायी क्रोध की। इसे व्यक्ति मरते दम तक अपने सीने में लगाए रखता है । यह क्रोध उस गन्ने की गाँठ की तरह होती है जिसमें एक बूँद भी रस नहीं होता है लेकिन गाँठ मजबूत होती है मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति मन में क्रोध की गाँठ बन जावे तो उसे निकालना बहुत मुश्किल होता है।

हमारा क्रोध तीन तरह का होता है :–

(i) सात्विक
(ii) राजसिक
(iii) तामसिक

घर की मर्यादाओं को बनाए रखने के लिए तथा औरों की भलाई के लिए किया जाने वाला क्रोध सात्विक होता है । इसमें व्यक्ति औंरों को सुधारना चाहता है वह भी अन्य किसी का नुकसान किए बगैर।

व्यक्ति का दूसरा गुस्सा होता है राजसिक जो अहंकार मूलक क्रोध होता है । कार्यालय में बॉस या मैनेजर ने अपने अधीनस्थ कर्मचारी को काम सौंपा यद्यपि उस दिन उस कार्य की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन शाम को कार्य पूर्ण न होने की दशा में मैनेजर/बॉस को क्रोध इसलिए आ जाता है कि उसके अधीनस्थ कर्मचारी ने उसके बताए कार्य को नजर अंदाज किया । घरों में भी कई बार बड़ों को क्रोध इसी कारण आता है।

तीसरा क्रोध होता है तामसिक यानि क्रोध जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए करता है । इसमें व्यक्ति सामने वाले को खरी खोटी सुनाता है अथवा उसकी कमजोरियों को सबके सामने उजागर करता है।

लाभ तथा हानि की दृष्टि से अगर हम क्रोध को देखेगें तो उसकी हानियाँ ही ज्यादा नजर आएंगी । क्रोधी व्यक्ति हर तरफ से नुकसान उठाता है स्वास्थ्य से भी और सम्बन्धों से भी। तीव्र क्रोध व्यक्ति का रक्तचाप बढ़ाता है और दिल व दिमाग दोनों को कमजोर बनाता हैं।

क्रोध की शुरूआत मूर्खता से होती है और उसका समापन पश्चाताप से क्रोध में व्यक्ति अपना विवेक खो बैठता है मसलन क्रोधित व्यक्ति अपने पुत्र को कई गालियाँ दे देता है और आप समझ सकते हैं कि वह अपने आपको क्या कह रहा है ?

क्रोध को कभी आदत न बनने दे यदि दिन प्रतिदिन गुस्सा करेगें तो हमारा क्रोध प्रभावहीन हो जाएगा। क्रोध मुक्ति का पहला सूत्र है – '' कल पर टालो किसी भी गलती या विपरीत टिप्पणी को। '' जब क्रोध आये तो उस पर विवेक का अकुंश लगाए और उसे दो चार घण्टे या अगले दिन तक टाल दें, क्रोध हमारी समझदारी को बाहर निकाल कर उस पर चिटकनी लगा देता है। जब व्यक्ति दो चार घण्टे के बाद अपने क्रोध को व्यक्त करेगा तो वह क्रोध भी होश व बोधपूर्वक होगा। व्यक्ति जब अपनी बात को व्यक्त करेगा तो भी विपरीत वातावरण से बचेगें । क्रोध करो मगर समझपूर्वक।

क्रोध से बचने के लिए दूसरा सूत्र भी अपनाया जा सकता है वह है कि स्वम् को अनुपस्थित समझो जब भी विपरीत वातावरण पैदा हो तो व्यक्ति सोचे कि यदि मैं यहाँ नहीं होता तो उन सब बातों का कौन जवाब देता।

क्रोध मुक्ति के उपायों में एक और अच्छा उपाय है कि क्रोध के समय टेलिग्राम की भाषा में अपनी बात व्यक्त करो । यदि आपको लगे कि वातावरण क्रोध का बन गया है और बिना बोले मामला ओर अधिक उलझ सकता है या आपको भी तेज गुस्सा आया हो तो सीमित शब्दों में अपनी बात को व्यक्त करे जिस प्रकार टेलिग्राम देते समय किया जाता है।

क्रोध मुक्ति का अन्य उपाय है ''परिणाम को याद करो।'' हम नित्य समाचार पत्रों में पढ़ते है कि पुत्र ने पिता पर गोली चलाकर मार दिया या पुत्र वधु को जला दिया गया ।

यदि व्यक्ति कोई भी कृत्य करने से पहले सोचे की इस कृत्य का परिणाम क्या होगा तो यह कृत्य करेगा ही नहीं । यदि व्यक्ति क्रोध जनित परिणामों को याद कर ले तो तनाव भरे माहौल से भी वह अपने आपको बचा सकता है।

यदि क्रोध आता भी है तो सावधान हो जाइये। खड़े है तो बैठ जाए ताकि गुस्सा केवल जबान से ही व्यक्त होगा। बैठे है तो लेट जाइए यदि इसके बाद भी गुस्सा शान्त न हो तो एक गिलास ठण्डा पानी पीले। इससे हम अनुभव करेगें कि एक बड़ी हानि से बच गए।

क्रोध मुक्ति का एक ओर उपाय है बोधपूर्वक बोलो और कार्य करो। यदि आपको लगे कि बिना बोले काम नहीं चलेगा तो सावधानी से अपनी बात व्यक्त करे।

क्रोध से बचने का एक ओर उपाय किया जा सकता हे क्रोध आने पर अपने आपको अन्य कार्य में लगा ले या उस जगह को छोड़ कर चले जावें।

अपने आपमें क्षमा व सहनशीलता का विकास करे। ये काफी लाभदायक सूत्र है। किसी के क्रोध का सामना सहनशीलता से किया जावे। क्षमा तो एक ऐसा मन्त्र है जिसे हजारों वर्षों से अपनाया गया है।बड़े से बड़े महापुरूषों ने इसी शस्त्र से आत्म विजय के संग्राम में सफलता प्राप्त की है । बड़ी से बड़ी विपरीत स्थिति या घटना हो जाने के बावजूद व्यक्ति क्षमाभाव से भरा होता है तो विपरीत वातावरण भी उस पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता।

अंग्रेजी भाषा का बड़ा प्यारा शब्द है सॉरी (Sorry) अर्थात् क्षमा कीजिए। व्यक्ति जो दिन में पचास से सौ बार (Sorry) शब्द का उपयोग करता है तो भला विपरीत वातावरण में इसका उपयोग क्यों नहीं कर सकता। क्षमा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं होता और शान्ति से बढ़कर कोई शक्ति नहीं होती है। हम अपने जीवन में इन दोनों का विकास करें तो हम अपने क्रोध पर काबू पा सकते हैं।

अशोक कुमार छाजेड़,
सर्वेक्षक,

''सर जॉर्ज एवरेस्ट'' एक परिचय
(4 जुलाई 1790– 1 दिसम्बर 1886)

दुनिया की संबसें उॅची पर्वत चोटी का नाम सर्वेक्षक ''कर्नल सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम रखा गया । यह उस शख्स को एक सच्ची श्रद्धांजली है, जिसने हर तरह की मुश्किलों का सामना करते हुए 25 वर्षो तक के अथक प्रयासों से भमॉगेस्ट आर्क ऑफ मेरिडियन का सर्वेक्षण कार्य किया ।

सन, 1806 में विलियम लैम्बटन ने '' केंप कोमारिन'' से जी.टी. सर्वेक्षण शुरू किया । 1806 में एवरेस्ट ने कैंडेट के तौर पर बंगाल आर्टिलरी में नियुक्ति पाई। 1818 में लैम्बाटन के सहायक के तौर पर नियुक्त हुए व 1823 में लैम्बाटन की मृत्यु पश्चात जॉर्ज ऐवरेस्ट इस कार्य के अधीक्षक बन गये। इस अति–महत्वपूर्ण कार्य के दौरान ऐवरेस्ट ने भौगोलिक परिस्थिति जलवायु व कार्य क्षेत्र कि विषम परिस्थियों में मशीन कार्य के तरीके व गणना में कई आधारभूत प्रयोग किये। परन्तु कार्य की गुणवत्ता से कोई समझोता नही किया।

इस कार्य में लंदन में बनी ''36'' की कैरी थिमोडोलाईट क्रोनोमीटर जेनिथ सेक्टर राक्सडेन 100 स्टीलपेन आदि उपरकरणों की सहायता ली।

कैरी थिमोडोलाईट 1000 पाउण्ड से भी वजनदार थी व दो जगह से बुरी तरह से क्षतिग्रस्त थी। स्टील चैन भी गत 25 वर्षो से संशोधित नही की गई थी। साथ ही एवेस्ट बुरी तरह बीमार पड गये तो इस कार्य को बीच में ही रोकना पडा।

1825 में ऐवरेस्ट, इंग्लैण्ड़, चले गये व साथ में प्रेक्षण व गणना के रिकार्ड भी ले गये। अगले पॉच साल तक उन्होने 18eृ03श व 24eृ07श अक्षांश के बीच किये गये महत्वपूर्ण कार्य का सम्पूर्ण ब्यौरा तैयार किया। साथ ही ट्राफटन व सिम्मस की कार्यशाला में 36 थियोडोलाईट के निमार्ण को बाराको से देखा व उसमें परिवर्तन कर कर 5 ब्यास से बनवाया जिसमें द्वितीय श्रेणी त्रिकोणीयन के सिद्धान्त अचूक बैढ़ते थे।

दूरी मापने के लिए आयरिश सर्वेक्षण करने वाले कर्नल कोल्बी के कम्पेसेंटिग बार के तरीके को सीखा। 1830 में एवरेस्ट भारत के महासर्वेक्षक बनकर भारत आये व जी. टी. सर्वेक्षण में उसका इस्तेमाल किया। साथ ही हैनरी बेरो, को भारत बुलवाया ताकि उपकरणों का निर्माण व मरम्मत भारत में ही हो सके।

उन्होने देहरादून बेस लाइन का कार्य किया व उसे सिंराग बेसलाईन से जोड़ा। प्रत्येक 400 मील की दूरी पर एवरेस्ट ने 50 Feet ऊॅची कंकरीट मीनोर बनाए व बनवडि व हीलियोड्रयर का इस्तेमाल किया। परिवहन के लिए 4 हॉथी 30 घोड़े, 42 ऊॅट व 700 मजदूरों की फौज बनाई गई।

एवरेस्ट के बीमार पड़ने पर एन्ड्रियू वॉ कार्य पूर्ण किया व बीडर बेसलाईन को पुनः मापा। एवरेस्ट ने 1841 से 1843 तक गणना कर कार्य किया। एन्ड्रियू वॉ ने हिमालय की खोजी गई सबसे ऊॅची चोटी च्मां ग्ट का नाम एवरेस्ट रखनें का सुझाव दिया। जिसे तिब्बत में कुमोलंग्मा व नेपाल में सागामार्था के नाम से पुकारा जाता है।

1865 में रॉयल थियोग्राफिकल सोसायटी ने Peak XV का नाम मांउट एवरेस्ट रखा।

शैलेष सोनी
पटल चित्रक वर्ग–।।

एक ईमानदार व्यक्ति, जिसे उसकी पत्नी ने बेईमान बना दिया

एक बार एक बहुत अच्छा ईमानदार व्यक्ति था। जो अपने व्यवसाय और अपने परिवार का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखता था। उसकी कंपनी ने उसे टूर(व्यवसायिक यात्रा) पर भेजा। उसके पास एक ब्रीफकेस था, जिसमें महत्वपूर्ण कागजात थे। यात्रा करते–करते जब वह थक गया तो उसने एक नदी पर बने पुल पर थोड़ी देर आराम करने का निश्चय किया। अचानक उसका ब्रीफकेस पानी में गिर पड़ा।

यद्यपि वह व्यक्ति उम्र में काफी बड़ा था। फिर भी वह रोने लगा, उसका ब्रीफकेस चाहे रेग्जीन का बना था, फिर भी उसके लिए बहुत कीमती था, क्योंकि उसमें बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज थे। वह पानी में कूद कर आत्महत्या करने के बारे में सोचने लगा। अचानक जलदेवता प्रकट हुए और उन्होने पानी में डूबकी लगाई और एक चमड़े का ब्रीफकेस लेकर बाहर निकले। लेकिन उस भले व्यक्ति ने वह लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि वह उसका नहीं था। देवता ने फिर डुबकी लगाई। इस बार उन्होने वी.आई.पी. का ब्रीफकेस निकाला। उस भले व्यक्ति ने इस बार फिर उसे लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि वह भी उसका नहीं था। देवता ने एक बार और डुबकी लगाई, इस बार उन्होने रेग्जीन का ब्रीफकेस निकाला। वह व्यक्ति इसे पाकर बहुत खुश हुआ और उसे सभी ब्रीफकेस दे दिए।

वह व्यक्ति खुशी–खुशी घर पंहुचा और अपनी पत्नी को ईमानदारी से वह सब कुछ बता दिया, जो हुआ था। उसकी पत्नी, उसकी ईमानदारी से बहुत परेशान हो गई और वह उस देवता से भी मिलना चाहती थी, जो इतना उदार था।

पति के पास पत्नी को पुल पर ले जाने के अलावा कोई चारा न था। दोनों पुल पर बैठ गए, अचानक उसकी पत्नी नदी में गिर पड़ी। वह व्यक्ति फिर से रोने लगा। देवता प्रकट हुए और उन्होने उसकी कहानी सुनी। वे नदी में कूदे और एक सुन्दर नारी को बाहर निकालकर उस व्यक्ति से पूछा, "क्या यही तुम्हारी पत्नी हैं ?" ईमानदार आदमी ने कहा–हां।

सर्वज्ञ देवता हैरान नहीं हुए लेकिन फिर भी उन्होने पुछा, 'पुत्र! तुम एक ईमानदार व्यक्ति हो। फिर भी तुम सच क्यों नहीं बोल रहे ?"

व्यक्ति ने उत्तर दिया, "प्रभु यदि मैं नहीं" कह देता, आप फिर डुबकी लगाते और अन्य सुशील षोडसी रेखा" को निकाल लाते। यदि मैं फिर नहीं कर देता तो आप फिर डुबकी लगाते और "मेरी पत्नी" को निकाल लाते। फिर मैं हां कहता– और फिर आपने मुझे तीनों औरतें दे दी होती। आप मेरी हालत का अंदाजा लगा सकते है। इसलिए, मैने थोड़ी सामान्य बुद्धि के साथ ईमानदार होने का निर्णय लिया।

इस कहानी में पत्नियों के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा है कि आप कई मामलों में ज्यादा समझदार हैं। अगर आप अपना वैवाहिक जीवन खुशी से भरपूर बनाना चाहती हैं तो हमेशा सच बोलिए। अपने पति को भी हमेशा सच बोलने के लिए प्रेरित करें। यह सब करने के लिए चाहे आपको कुछ कम विलासित जीवन ही क्यों न गुजारना पड़े। आह! जिंदगी की इस रचना के लिए मैं आभारी हूँ।

संकलनकर्त्ता

(भँवर लाल शर्मा)

ग्रुप "सी"(सेवानिवृत पूर्व ग्रुप "डी")

मौत एक इन्सान की

कल पड़ा था एक चौराहे पर लथपथ आदमी,
खून बिखरा था सड़क पर, देखते थे आदमी।

"कोई ले जाओ" की आवाजें,
दिये जाते थे सब।
पर किसी ने भी चिकित्सक,
तक न पहुँचाया उसे।
ऊपरी ही दया दिखाते,
चले जाते थे सब।
यूँ किसी ने पास तक जाकर,
न सहलाया उसे।

भावनायें मर गई थीं, ख़ौफ फॅस जाने का था।
इंसानियत के वास्ते यह वक्त गड़ जाने का था।
आदमी में बस रहे ईश्वर के मर जाने का था।
सच कहूँ वह वक्त तो धरती के हिल जाने का था।

लोग थोड़ी देर में,
अपने घरों को चल दिये।
एक दिन वे भी मरेंगे,
सच झुठाकर चल दिये।
उस तड़पती जान का तो,
हो गया जो होना था।
पत्थरों के उन खुदाओं,
को भला क्या रोना था।

मौत उस इन्सान की बस इक फ़साना बन गई।
एक रपट कालम में छपने का बहाना बन गई।
सच कहूँ इस हादसे में क्या था मैंने भी किया?

विनोद गुप्ता
खलासी

जीवन प्रवाह– कुछ बिन्दु

1. यदि आप अपने मन को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, तो जीवन को भी नियंत्रित नहीं कर सकते हैं।
2. यदि आपको जीवन से प्रेम है, तो समय का सदुपयोग करो, यदि आपने समय को नष्ट किया तो समय आपको नष्ट कर देगा।
3. यदि आप दूसरों की कमजोरियों को मन में रखते हैं, तो वे शीध्र ही आपका स्थायी अंग बन जायेगी।
4. याद रखिए आपके उत्थान या पतन में आपकी आदते सर्वाधिक जिम्मेदार होगी।
5. याद रखिए भाग्य आधारित जीवन जीने से लक्ष्य आधारित जीवन जीना श्रेष्ठ है।
6. याद रखिए "कड़ी मेहनत" (बेस्ट इनपुट) के बिना कोई भी "अच्छा परिणाम" (बेस्ट आउटपुट) नहीं प्राप्त कर सकता है।

———❄———❄———❄———❄———❄———❄———

जीवन में कुछ पाने के लिए आवश्यक हैः–

विभाजन	ð ð	कार्यों में
समानता	ð ð	व्यवहारों में
वृद्धि	ð ð	प्रयासों में
विभिन्नता	ð ð	विचारों में
निश्चयता	ð ð	लक्ष्य प्राप्ति में

ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð ❄ð ð

आप कर सकते हैंः–

व्यक्तित्व के	ð ð	आकर्षण से
विकारों मे	ð ð	प्रतिकर्षण से
व्यवहार के	ð ð	प्रभाव से
कार्यशैली की	ð ð	प्रेरणा से
सद्गुण की	ð ð	विशिष्टता से
विचारों की	ð ð	उपयोगिता से

श्रेष्ठ समाज का निर्माण

संकलन कर्त्ताः–
भंवर लाल प्रजापति,
पटल चित्रक ग्रेड–।।

——❊—— जीवन–सार ——❊——

1. कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापर।
उतिष्ठरन्त्रेता भवति कृत संपधते चरन्।।

अर्थात्:– सोते रहना ही कलयुग है। जागरणोपरांत जम्हाई लेना द्वापर है। उठ कर चलना ही त्रेता है। लक्ष्य के लिए गतिशील होना ही सतयुग है। अतएव लक्ष्य प्राप्ति के लिए चलते रहो, आगे बढ़ते रहो।

2. बच्चा जन्म लेता है तब उसका वनज ढाई किलो होता है। मृत्यु के पश्चात अग्नि संस्कार के बाद उसकी राख का वनज भी ढाई किलो होता है।

जीवन का पहला कपड़ा जिसे जन्म के बाद पहली बार पहनते है उसमें जेब नहीं होती है और जीवन का आखरी कपड़ा (कफ़न) में भी जेब नहीं होती है।
तो जन्म व मृत्यु के बीच मनुष्य इतनी चिंता, दौड़धूप, दगा और प्रपंच क्यों करता है।

ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð

3. <u>सत्य और असत्यः–</u> एक दिन छाया ने मनुष्य से कहा 'लो देख लो तुम जितने थे उतने ही रहे और मैं तुम से कई गुणा बढ़ गई'। मनुष्य मुस्कुराया, उसने कहा,'सत्य और असत्य में यही अतंर है। सत्य जितना है, उतना ही रहता है और असत्य पल–पल में धटता–बढ़ता रहता है।

ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð ❊ð ð

4. <u>जीवन के पॉच कल्पवृक्ष</u>

(i) ज्ञानी का – विनयवान होना
(ii) रूपवान का – सदाचारी होना
(iii) सत्ताधारी का – न्यायशील होना
(iv) धनवान का – उदार व त्यागी होना
(v) बलवान का – क्षमाशील हो

संकलन कर्त्ताः–
विजय कुमार वी.श्रीमाली,
पटल चित्रक ग्रेड–।।

मातृभाषा हिन्दी

हिन्दी भारत की मातृभाषा है, भारत के अलावा यह फिजी, मॉरीशस, नेपाल में भी बोली जाती है। भारत में प्रमुखतः उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड में बोली जाती है। हिन्दी भाषा में शब्दों का विशाल भण्डार है। जो किसी भी क्षेत्र जैसे खेल, पत्रकारिता, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विधि, विज्ञान आदि में किसी भी स्थिति एवं क्षण में उपयोग में लाने के लिए पर्याप्त है। निसंदेह यह युवाओं में उनके भविष्य की सफलता, उनके रोजगार एवं प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिलाने के लिए पूर्ण रूप से सक्षम है, फिर भी युवाओं के मन में हिन्दी भाषा को लेकर भय की आशंका बनी रहती है। आज भारत में इसके विकास एवं विस्तार के लिए 'हिन्दी सप्ताह' का आयोजन किया जाता है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में कार्य करने का परामर्श दिया जाता है।

आज युवाओं में हिन्दी से भय पैदा हुआ है और एक हद तक विश्वास हो चला है कि अंग्रेजी बोलना अपने आप में आधुनिकता का परिचय है। इसी धारणा के चलते हिन्दी के स्थान पर अग्रेंजी की अनिवार्यता बढ़ गई है।

इसका एक विशेष कारण, जिस पर नजर डालने की जरूरत है, वह है शिक्षा पद्धति और भारत में अग्रेजों का शासन करना। भारत में मातृभाषाओं में दी जाने वली देशी पद्धित को ध्वस्त करने और अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को मजबूत बनाने में 1854 में सर चालर्स बुड द्वारा लाए गए डिस्पैच और मैकाले की योजना ने अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की शिक्षा पद्धति के इतिहास में यही से ऐसा मोड आया जिसमें शिक्षा की ऐसी नीव रखी गई जिसने ब्रिटिश हुक्मरानों की जरूरतों की आपूर्ति करने वाली पीढ़ियों को निर्माण का सिलसिला आरम्भ कर दिया। देखते ही देखते भारतीय समुदाय में ऐसा वर्ग तैयार होने लगा, जो विदेशी शासकों की भाषा बोलने लगा और उस भाषा के वर्चस्व कायमी की वकालात भी करने लगा। फिरंगी हुक्कमरानों ने इस पीढ़ी को विशेष महत्व और अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने की दृष्टि में ओपनिवेशिक सेवा के उच्च पदों को अंग्रेजी से जोड़ देने की सरकारी नीति ही लागू कर दी। भारतीय युवकों को पाश्चात्य संस्कृति में रंगने का यह एक नायाब एवं सार्थक तरीका था। नतीजतन एक ऐसे वर्ग की जड़े गहरी होती चली गई, जो अपने को देशी शिक्षा से नहीं समग्र भारतीय राष्ट्रीयता से ही अलग मानने लगे थे। अंग्रेजी शिक्षा शास्त्री लाइन्नर ने इस तथ्य की पुष्टी करते हुए कहा भी था—भारत में जहां भी अंग्रेजी विद्यालय का प्रभाव बडा वहां से राष्ट्रीय बौद्धिकता के चिन्ह लुप्त होते चले गए। मातृभाषा में देशी शिक्षा का पाठ पढ़ाने वाले विद्यालयों की समाप्ति की जो शुरूआत हुई, उनके साथ ही लोकगीत, लोक कथाऐं, बोध

कथाऐं और जातक कथाऐं भी लुप्त होते चले गए। अंग्रेजी ने जिस चतुराई से देशी भाषाओं में दी जाने वाली शिक्षा पद्धतियों को नष्ट करना शुरू किया और उसके साथ ही हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों की भी रक्षा पूरी तरह नहीं कर पाए, दूसरे हम समाज को परिवर्तन के लिए तैयार भी नहीं कर पाए। जिसका नतीजा यह निकला कि जिन मूलभूत अवधारणाओं के जरिए हम समाज में व्याप्त जिन शाश्वत मूल्यों को जीवन्त बनाए रखते थे, वे मूल्य खत्म होते चले गए। बीते पचास सालों में मानवताविहिन एक ऐसा ढॉचा बना जो केवल प्रोद्यौगिक और सूचनात्मक जानकारियों से भरा था। कम्प्यूटर के चलन और विस्तार से इस ढांचे को और मजबूती मिली ओर शिक्षित व्यक्ति एक मशीनी मानव के रूप में सामने आने लगा। इस मानव का वास्ता सामाजिक पुर्नरचना करने की बजाय खुद की आर्थिक पुर्नरचना करने मे ज्यादा रहा। भारतीय जनमानस के रूप में एक धारणा यह भी व्याप्त है कि यदि वे अपने बच्चों को अग्रेंजी माध्यम से नहीं पढ़ाएगे तो उनके बच्चें औरों की तुलना में पिछड़ जाएगें। यह नया चरण अंग्रेजी का नई चाल में ढलने का है। यह एक उपभोक्ता क्रान्ति का परिणाम भी है और कारक भी। आज काम के प्रश्न को लेकर वर्तमान युवा पीढी को अंग्रेजी एक आवश्यकता है, जिसका नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं हैं आज अंग्रेजी ने रोजगार या कैरियर में अपना प्रभुत्व इतना मजबूत बना लिया है कि इसके बिना कोई युवा सफल नहीं हो सकता।

उपरोक्त बातों को देखते हुए आज हिन्दी भाषा को सांस लेने में कठिनाई हो रही है। आज हर भारतवासी का कर्तव्य बन जाता है कि अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करें हिन्दी का अधिक से अधिक हर क्षेत्र के हर स्तर पर पूर्ण विश्वास के साथ उपयोग करें, तभी हिन्दी का विकास एवं विस्तार होना संभव है। अभी हाल ही में माह नवम्बर, 2010 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा के दौरान कथानुसार भारत विकासशील नहीं विकसित राष्ट्र है, इसी कथनानुसार हर भारतवासी को पूर्ण विश्वास के साथ अपने देश को विकसित देशों की पक्ति में अग्रणी रखने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। इससे हिन्दी भाषा बिना भय के गोरांवित हो सकेगी।

(एन.पी.एस. नेगी)
अधिकारी सर्वेक्षक
(अब जी.एण्ड आर.बी. देहरादून स्थानान्तरित)

'सत्संग कलिकाए'

❄ जैसे जूते पहन कर निःशक कॉटों पर चला जा सकता है इसी तरह (तत्वज्ञान) का आवरण पहन कर मनुष्य इस कॉटेदार संसार में विचरण कर सकता है।

❄ पानी में नाव रही तो कोई हानि नही, परन्तु नाव में पानी पहुॅचा तो डूब जायेगी। साधक को संसार में रहने से कोई हानि नहीं, परन्तु साधक के मन में संसार घुसने का फल बुरा होता है।

❄ कटहल तोड़ने के लिए लोग हाथों में तेल लगा लेते है, क्योकि ऐसा करने से कटहल का दूध हाथों में नहीं चिपकता, इसी प्रकार यदि ज्ञान रूपी तेल हाथ में लगा कर इस संसार रूपी कटहल का उपभोग किया जाय, तो माया मोह रूपी दूध का दाग मन में नहीं लग सकेगा।

❄ रेशम के कीड़े जैसे अपनी लार से अपना घर बना कर आप ही उसमें फॅस जाते है। जब वे रेशम के कीड़े तितली बन जाते हैं तब घर को काट कर निकल आते है। इसी प्रकार विवेक और वैराग्य के उदय होने पर बद्ध जीव (बंधे जीव) भी मुक्त हो जाते है।

❄ रेल का इंजन स्वयं भी आगे बढ़ता है और कितने ही माल डिब्बों को भी अपने साथ खींच ले जाता है। उसी प्रकार महापुरूष भी हजारों– लाखों मनुष्यों को ईश्वर के निकट पहुॅचा देते है।

❄ जो सुखों में सुख का भोगी बनता है, वह अकाल मृत्यु और अकारण अशान्ति का शिकार होकर अकाल पदच्युत हो जाता है। सुख का अधिक भोग नहीं करना चाहिए। सुख बॉटने की चीज है, दुःख पैरों तले कुचलने की चीज है।

❄ जब हमारे ह्रदय में भगवान के ज्ञान को पाये हुए अनुभव–सम्पन्न महापुरूषों के प्रति सद्भाव होता है और उनकी कृपा, नूरानी निगाहें मिलती है तो हमको भगवदरस आने लगता है, जिससे संसार का रस फीका लगने लगता है। भक्ति मे से भक्तियोग हो जाता है।

❄ ऐसा कोई भी संसारी सुख नहीं, जिसके बदले में दुःख न हो, अगर संसार में सच्चा सुख होता तो भगवान को कोई आवश्यकता नहीं होती। संसार स्वय मिथ्या है। मिथ्या संसार में सच्चा सुख था ही नहीं, है ही नही, हो सकता नहीं, दिखनेभर को है।

(बलवीर सिंह)
ग्रुप–सी

महापुरूषो की अमर सूक्तियां

- ❖ जिंदगी एक बहुत बड़ा कैनवास है और आपको चाहिए कि आप इस पर जितने रंग बिखेर सकते है, बिखेर दे। "डेनीके"

- ❖ समय की धारा में सब कुछ बह जाता है, रह जाती हैं तो केवल स्मृतियां। दूसरों के मन में अपने लिए मधुर स्मृतियां बनाइए।
"रेकी दर्शन"

- ❖ धारा की दिशा में शव भी बह सकता है, किन्तु धारा के विरूद्व तैरना ही जीवन का प्रमाण है। "चैस्टर्टन"

- ❖ प्रेम की शक्ति दंड की शक्ति से हजार गुणा प्रभावशाली और स्थायी होती है। "महात्मा गांधी"

- ❖ आत्मविश्वास संक्रामक है और आत्मविश्वास न होना भी।
"माइकल ओब्रियन "

- ❖ पृथ्वी पर तीन रत्न है, जल, अन्न और सुभाषित। मूर्ख लोग ही पाषाण खंडों को रत्न का नाम देते है। "चाणक्य"

- ❖ दुनिया में दो ही ताकतें है, तलवार और कलम और अतं में जीत हमेशा कलम की ही होती है। "नेपोलियन"

- ❖ विश्वास तर्क से कहीं अधिक बढ़िया मार्गदर्शक है, तर्क बस कुछ दूर ही जा सकता है, किन्तु विश्वास की कोई सीमा नहीं होती। "पास्कल"

- ❖ प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूॅ किसी न किसी रीति मे मुझसे श्रेष्ठ होता है, इसलिए मै उससे कुछ शिक्षा लेता हूॅ "एमर्सन"

- ❖ जो लोंग अपने समय का सबसे अधिक दुरूपयोग करते है, वे ही सबसे पहले इसके अभाव की शिकायत करते है। "ज्या दा ला ब्युयेर"

संकलनकर्ताः—
कैलाश चन्द मीणा,
पटल चित्रक ग्रेड—।।

''हमारा राजस्थान''

राजस्थान की धारा है पावन– देव भूमि है पाप नसावन।
महिमा इसकी अजब निराली– कुदरत का है, रंग मन भावन।।

धूल भइया धोरां री धरती– जिसमें हीरा, मन माणक मोती।
प्रेम की गंगा इसमें बहती– वीर शहीदों की वो ज्योति।।

जौहर की ज्वाला के रंग में– बसती अग्नि अंग–अंग में।
आन–बान और शान की खातिर– सब कुछ त्याग दिया था आखिर।।

महाराणा प्रताप प्रतापी– इस भूमि के वीर साहसी।
हर पल दुखड़े सहन किये– लेकिन अधीन कभी ना रहे।।

जन्म लिया मीरां ने यहां पर– वश में कर लिया अपने गिरधर।
पावन गंगा भक्ति रस की– बनी मिशाल आज इस जग की।।

तीर्थराज पुष्कर है पावन– रणथम्भौर में देव गजानन।
देलवाड़ा में, जैन धाम– अजमेर में ख़्वाजा का पैगाम।।

गलता तीर्थ का स्नान– जयपुर में गोविन्द देव महान।
आमेर में है, शीला माता– हर कोई यहॉ दर्शन को आता।।

रामदेव रूणीचे बिराजै– श्याम छटा खाटू में साजै।
मेहन्दीपुर, सालासर बजरंगी– भक्तजनों के हरदम संगी।।

है, रंग रंगीला राजस्थान– विश्व में इसकी अलग पहचान।
"मदन" नमन जय राजस्थान–राजस्थान जय राजस्थान।।

मदन लाल
मानचित्रकार डिवि–।

पानी प्रकृति की अनुपम देन

पानी पृथ्वी की सर्वविदित प्रदार्थ है, लेकिन यह असाधारण भी है। इस गंधविहीन, रंगविहीन और स्वाद विहीन प्रदार्थ की रासायनिक प्रकृति अद्वितीय है। पृथ्वी पर यही एक मात्र प्रदार्थ है जो तीनों अवस्थाओं– ठोस, तरल और गैस में पाया जाता है। अन्य प्रदार्थो के विपरीत जब यह जमता है तो इसका आयतन घटता नहीं बढ़ता है और यह हल्का हो जाता है। जमने पर पानी का आयतन 9 प्रतिशत बढ़ जाता है। यही कारण है कि बर्फ पानी पर तैरती है। पानी के टैंक में बर्फ की शिला डालने पर डूबती नहीं क्यों कि बर्फ का वजन पानी की तुलना में 9/10 भाग पानी के नीचे रहेगा।

पानी का स्थाइत्व बेजोड है। यह चीजों को सुगमतापूर्वक घोल सकता है और रासायनिक ऊर्जा भी पैदा करता है। अन्य प्रदार्थो के बनिस्त पानी ज्यादा ऊष्मा सोखता और उत्सर्जित करता है, ऐसा इसलिए है कि पानी की रासायनिक प्रकृति अद्वितीय है। यह सर्वविदित है सब प्रदार्थ अणुओं से बनते हैं। पानी के एक अणु में दो परमाणु हाइड्रोजन के व एक परमाणु ऑक्सीजन के साथ मिलाया जाए तो ये मिलकर प्रतिक्रिया करेंगे तथा ऊर्जा उत्सर्जित होगी तथा पानी बनेगा। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से मिलकर जो बन्धन बनेगा उसको तोड़ना बहुत मुशकिल है अतः यह कहा जा सकता हैं कि पानी का स्थायित्व बहुत–बहुत अधिक हैं। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के अणु जब संयोग करते हैं तो ऊर्जा निकलती है। यदि आधा कि.ग्रा. शुद्व हाइड्रोजन 4 किग्रा शुद्व ऑक्सीजन से क्रिया करती है तो साढे चार किग्रा पानी बनेगा और इससे जो ऊर्जा पैदा होगी वह 60 वाट के बल्व को 325 घंटे तक चालू रख सकता है।

पानी को सार्वभौमिक सॉल्वेंट

पानी को सार्वभौमिक सॉल्वेंट माना जाता है। पानी की घुलनशील क्षमता अन्य सब तरलों से ज्यादा है। अतः पानी जहॉ भी जाता है, जिधर से भी जाता है अपने साथ बहुत से खनिज, रसायन और पोषक तत्व घोलकर ले जाता है। यदि पानी में यह घुलनशीलता की क्षमता न होती तो जीवन ही संभव न होता क्योंकि घुलनशीलता से पानी जीवधारियों और पौंधों को पोषक तत्व पहुंचाता है जिससे जीवन चलता है।

सर्वथा शुद्व पानी प्राप्त करना बहुत मुशकिल

पानी सार्वभैमिक सॉल्वेन्ट है अतः सर्वथा शुद्व पानी प्राप्त करना करीब–करीब असम्भव है, क्योंकि इसमें अन्य प्रदार्थ घुले रहते हैं। वर्षा के पानी में वातावरण की गैसें घुली रहती हैं। समुद्र के पानी में सैकड़ों ऑर्गेनिक– इनऑर्गेनिक यौगिक प्रदार्थ धुले रहते हैं। करीब आधे से ज्यादा तत्व पानी में घुले मिलते हैं। यहॉ तक कि जो पानी हम पीते हैं उसमें भी कई खनिज तथा लवण घुले रहते हैं। समुद्र,

नदी, नहर, तालाब सभी असंख्य तत्वों का घोल ही हैं, जिससे जीवन संभव हुआ है। पृथ्वी पर उपलब्ध 90 प्रतिशत पानी सामुद्रिक पानी लवणीय है अतः पीने योग्य नहीं है। यह बड़ी आश्चर्य चकित करने वाली बात है कि समुद्र के पानी का सारा नमक निकालकर पृथ्वी की सतह पर फैला दे तो 152 मीटर मोटी परत बन जाएगी।

बूँद–बूँद से बड़ी बर्बादीः–

1. एक टपकते नल से प्रति सैकेन्ड एक बूँद बर्बाद होने से हर महीने 760 लीटर पानी व्यर्थ बह जाता है।
2. सीधे नल से नहाने पर 90 लीटर पानी खर्च होता है।
3. हाथ धोकर नल ठीक से बंद नहीं करने से एक मिनट में 30 बूँद और सालाना 46 हजार लीटर पानी बर्बाद हो जाता है।
4. प्रेशर से कार धोने, नल की धार में सब्जियां धोने और पाइप से बगीचें में बेवक्त पानी देने में भी पानी की भारी बर्बादी होती है।
5. खेतों में नहर से या पाइप से सिंचाई करने में ज्यादा पानी लगता है।
6. हम टॉयलेट और यूरिनल में पानी बर्बाद करते हैं।
7. सार्वजनिक नलों को बहता देखकर भी उन्हें बंद नहीं करते हैं।

(अशोक कुमार)
अधिकारी सर्वेक्षक
(अब जी.एण्ड आर.बी. देहरादून स्थानान्तरित)

प्रेम की शक्ति

प्रश्नः दुनियां में प्रेम से बड़ी कोई शक्ति है ?

उत्तरः नहीं। क्योकि जो व्यक्ति प्रेम करता है वह भय मुक्त हो जाता है। ठीक वैसे ही है कि जो व्यक्ति परमात्मा से प्यार करता है, फिर उसे किसी का भय हो ही नहीं सकता। प्रेम एक ऐसा मंत्र है, जो किसी तरह के भय को पास भी नहीं फटकने देता है।

"एक युवक अपनी नई दुल्हन के साथ बीच समुद्र में यात्रा कर रहा था। सूर्यास्त हुआ, रात्रि में घना अंधकार छा गया और एकाएक जोरों का तूफान उठा। सभी यात्री व्याकुल हो उठे, प्राण संकट में थे और जहाज अब डूबा, तब डूबा ऐसा होने लगा। किन्तु वह युवक जरा भी नहीं घबरायां। उसकी दुल्हन ने आकुलता से पूछा," तुम निश्चिंत आराम से क्यों बैठे हो ? देखते नहीं जीवन के जरा भी बचने की सम्भावना खत्म होती जा रही है ?

उस युवक ने अपनी म्यांन से तलवार निकाली और पत्नी की गर्दन पर रखकर कहां, क्यों तुम्हें डर लगता है ? युवक बोला– क्यां मेरी तलवार से तुम्हारे प्राण संकट में नहीं है ? दुल्हन हंसने लगी और बोली, "तुमने यह कैसा ढ़ोग रचा ? कैसा मजाकपूर्ण नाटक खेल रहे हो ? तुम्हारे हाथ में तलवार हो तो मुझे भय कैसा। क्योकि मैं तुम्हें और तुम मेरे से प्यार करते हैं तो भय किस बात का।" वह युवक बोला, प्रेममय (सहित) परमात्मा के होने की जब मुझमें गंध मिली, तब से ऐसा ही भाव उसके प्रति भी है। प्रेम ही ईश्वर है, तो भय रह ही नहीं जाता है।"

प्रेम करने से भय दूर होता है और घृणा से भय उत्पन्न होता है, जिसे भय से ऊपर उठना हो उसे सभी के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार से भर जाना होगा। चेतना के इस दरवाजे से ह्रदय के अन्दर प्रेम आता है, तो उसी दरवाजे से भय बाहर हो जाता है। जो प्रेम के रंग में रंग गया, जिसने उस (प्रेमी) पर भरोसा कर लिया, उसे भय कैसा। एक बार परमात्मा (श्रेष्ट इन्सान) से प्रेम करके देखों, एक बार उसे अपनाओं अपना बना कर तो देखों, सारा भय गायब होते ही परम–आनन्द प्राप्त हो जाएगा।

ओशो

"एक व्यक्ति का किसी से प्यार हो जाना अनूठी घटना है क्योंकि प्रेम एक तरफा भी होता है। देखना यह है कि इस प्रेम को आपस में किस नजरिए देखते हैं, यह दोनों के विश्वास पर निर्भर करता है, लेकिन किसी से प्यार हो जाना अपने आप में विचित्र संयोग है इसे मानना ही पड़ेगा जो कि यह अपराध नहीं होना चाहिए।"

आप परिवार में रहे जब प्रेम का व्यवहार करे, उस समय प्रेम से सराबोर रहिए। एक के भीतर का प्रेम साथ में मौजूद दूसरों के भीतर अपनी महक जगा देता है, प्रेमपूर्ण व्यवहार से परिवार व दोस्तो के बीच में छोटी–छोटी दूरिया खत्म होकर संबंध मजबूत बनते है।

कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देत।
मीठी बानी बोलकर सबै अपना कर लेत।।

(प्रेमसिंह सिनसिनवार)
भण्ड़ारपाल ग्रेड–।।

सर्वेक्षण के रोमांचकारी क्षण

भारतीय सर्वेक्षण विभाग में क्षेत्रीय कार्य अपना विशेष महत्व रखता है, या यू कहे कि हमारे विभाग की रीढ़ की हड्डी के समान है बगैर क्षेत्रीय कार्य हम अपने विभाग का कार्य पूर्णता के साथ नहीं कर सकते। पूरे भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष सर्वेक्षण कार्य हेतु छोटी– छोटी टुकड़ी बनाकर विभिन्न क्षेत्रों में भेजा जाता है क्षेत्र में कई बार हमारे साथियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मैं भारतीय सर्वेक्षण विभाग में 13 मार्च 1975 से कार्य कर रहा हूं और तकरीबन हर वर्ष सन 2008 तक मैने लगातार क्षेत्रीय कार्य में हिस्सा लिया है।

यहां मैं कुछ प्रमुख घटनाओं का जिक्र करना चाहूंगा जिससे मेरे साथियों को क्षेत्रीय कार्य हेतु लगन पैदा हो और वे प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय कार्य हेतु विभाग के कहने पर तुरन्त जाने को उत्सुक हो।

यह मेरे प्रथम बार क्षेत्रीय कार्य पर जाते समय मार्ग की घटना है।

हमारे प्रभारी अधिकारी श्री के. एन. सक्सेना के आदेश पर अजमेर से 4 पार्टी से एक टुकड़ी में मुझे अपने वरिष्ठ साथी श्री पी.सी. गुप्ता के साथ जाने का अवसर मिला। नियत दिवस पर सॉयकाल हम, सड़क मार्ग से अजमेर से अन्ता शिविर के लिए यात्रा के लिए चल दिये तथा अगले दिन सवेरे हम काली सिंध नंदी के किनारे पहुॅच गए। वहॉ पहुॅच कर देखा कि नदी में भयंकर उफान आया हुआ है। नदीं का पुल जलमग्न था। जिससे हमारी यात्रा बाधित हो गई थी। आगे जाने के लिए हमने पड़ोस के गांव से दो नावों का इंतजाम करना पड़ा। ट्रक से सारा सामान उतार कर दोनो नावों पर सामान लाद कर, उफनती और विकराल रूप धारण कियें नदी को पार किया। दूसरे तट पर भी एक ट्रैक्टर का प्रबंध करने में काफी कष्ट उठाने पड़े। उसके बाद ही अपने लक्षित स्थल अन्ता पहुचें। अन्ता पहुचकर हमने दोहरा तलेक्षण कार्य शुरू किया। कुछ समय बाद शिविर में हमारे प्रभारी अधिकारी क्षेत्रीय कार्य का निरीक्षण करने हेतु आये तब उन्होंने हमारे साहस व कर्तव्य निभाने के लिए बधाई दी।

इसी क्रम में एक दूसरी ओर घटना का विवरण आपके सामने रखना चाहूंगा।यह घटना 1984–85 वर्ष के दौरान फरवरी माह की है। मैं जैसलमेर जिले के म्यांजलार तहसील में भारत–पाकिस्तान सीमा चौकी पोचीना के नजदीक, रेक्टेंगुलेशन का कार्य कर रहा था। इस क्षेत्र में. रेत के बड़े–बडे टीले हैं। आस–पास कही पानी नही था। राशन की सप्लाई भी हमें महीने में एक बार शिविर मुख्यालय से ट्रक के माध्यम से होती थी। ऊॅटों द्वारा पीने का पानी 10–15 किलोमीटर दूर से लाया जाता था। हम चार व्यक्तियों (मैं, सर्व श्री ए.के. बोस, एच.एस. देवड़ा व ए.के. शर्मा) का हमारा शिविर सुजानगढ़ की ढ़ाणी के पास स्थापित था। शाम का वक्त था अचानक एक टिब्बे के पीछे से चार पांच ऊंट

निकले। मैने सोचा शायद शर्मा जी इस ओर से आ रहे हैं। पर पास आकर इन ऊंट सवारों ने, मुझें व मेरें स्कवायड को चारो ओर से घेर लिया। मैं घबरा गया। अचानक मेंरे स्कवायड का एक ऊंट चलाने वाला जमीन पर कूदा और उन ऊंटों की ओर साफा हिलाते हुएं भागने लगा। दरअसल जिन लोंगो ने हमें घेरा था, वे तस्कर थें। हर ऊंट पर रायफल लिए एक व्यक्ति सवार था और ऊंटों के दोनो ओर गठठर लदे हुये थे। वे हमें बीएसएफ वाले समझ कर हम पर हमला न कर दें इसीलिये हमारे स्कवॉएड का ऊंटवाला साफा हिलाते हुए भागा था। जिसका मतलब यह था कि हम बीएसएफ वाले नहीं हैं। उन तस्करों ने हमारे स्कवाड के श्री मोहनलाल के ऊंट को पकड़ लिया और उससे पूछने लगे कि हम कौन लोग है। उन्होने उससे बीड़ी मांगी। वह ज्योही बीड़ी देने लगा तो उन लोगों ने पूरा बंडल व वाटर बोतल ही छीन ली। उसके बाद ही तस्करों ने आपस में परामर्श किया और कुछ समय बाद हमें छोड़कर आगे बढ़ गये। इस घटना से हम हैरान रह गये। मैंने अपने वरिष्ठ साथी श्री एच.एस. देवड़ा को घटना के बारे में बताया। देवड़ा साहब ने हमें साहस रखने की सलाह दी और हमारा उत्साह बढ़ाया। उनसे बातचीत कर हम अपने शिविर को चले गये और पुनः वापस अपने कार्य में लग गए।

एक घटना गुजरात की है। मैं आई. एम. टी. (इडिपेडेंट मॉडल ट्रॉयगुलेशन) कार्य हेतु मैं 1994–95 सत्र में गुजरात के भोडासा के क्षेत्र में कार्य कर रहा था।

हमारा यह प्रयास रहता था कि एक मॉडल प्वाइंट से दूसरे मॉडल प्वाइंट तक की अनुमानतः 10 से 15 कि.मी. दूरी का इकहरा तलेक्षण एक ही दिन में पूरा हो जाये। इसलिये सवेरे सूर्योदय से पहले निकल जाते थें। ऐसे ही एक मॉडल प्वाइंट का इकहरा तलेक्षण कार्य तेजी से करते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। दोपहर हो चुकी थी करीबन 3 बजे का वक्त था हम एक खेत से गुजर रहे थे कि एक व्यक्ति एक बड़ा सा पत्थर लेकर मेरे पीछें दो कदम की दूरी पर आ खड़ा हुआ और मारने की मुद्रा में पत्थर उठा कर अपशब्द बोलने लगा। क्षण भर तो मैं सकपका गया। फिर हिममत जुटा कर उसकी आखों में आखें डालकर मैं चिल्लाया– ' हाथ से पत्थर मत छोड़ना' । जब उसे लगा कि मैं उससे डरा नही तो उसने मेरे ग्रुप–डी से लेवलिंग स्टाफ छीन लिया और यह कहता हुआ कि मैं तलवार लेकर आता हूँ भाग गया। शोर सुनकर अन्य व्यक्ति और महिलाएं भी आ गई एकत्रित सारे लोग कहने लगे कि आप यहा से चलें जाये। ग्रामीण हमें समझा ही रहे थे कि वह पत्थर वाला सचमुच तलवार लेकर आता हुआ दिखाई दिया। तब मैनें तुरन्त लेवलिंग मशीन स्टेण्ड से खोली और सभी साथियों से अपना–अपना सामान लेकर दौड़कर जाने को कहा। हम अपना सामान लेकर भाग रहे थे और वह आदमी तलवार लेकर पीछे–पीछे दौड़ रहा था। हम दौड़ते हाफते हुएं पास के गांव में पहुंचे और पंच का मकान पूछा। जहां हमको शरण मिली। संयोग से पंच, पड़ोस के गांव में गया हुआ था। उसे इस संकट के बारे में संदेश द्वारा सूचना देकर बुलवाया। पंच अपने घर आया तब तक रात हो चुकी थी। मैनें अपने अदर्ली को शिविर में भेज दिया । जिससे की रात को केम्प अदर्ली के साथ शिविर की रखवाली करे। वह रात हमने पंच के आंगन में बिताई। पर नींद हमसे कौसो दूर थी। चिन्ता सताई जा रही थी कि कहीं वो व्यक्ति लेवलिंग स्टाफ को तोड़ कर बेकार न कर दे। क्योंकि लेवलिंग स्टाफ अभी तक उसी के पास था। आधी रात हो चुकी थी वह व्यक्ति नशे में चकनाचूर होकर अपशब्द बोलता हुआ इस वक्त भी पूरे गांव में हमे

ही ढूंढ रहा था। उसके मन में भय बैठ गया था कि कहीं हम उसकी जमीन का अधिग्रहण न कर लें। सुबह होते ही हम पंच के साथ उस व्यक्ति के घर गये ताकि पंच उसको समझाकर हमारा लेवलिंग स्टाफ दिलवा दे और हम शेष सरकारी कार्य पूरा कर सके। पर वह व्यक्ति तलवार लेकर हमारी ओर आने लगा। यह देख पंच भी भागा और हम शिर पर पांव रखकर वहां दोड़े। गांव पहुंचकर पंच ने ग्रामीणों को इक्ट्ठा किया और फिर सारे मिलकर उस व्यक्ति के मकान पर उसे समझाने के लिये गए तथा उसे समझाया गया कि सर्वेवाले गांव के ही फायदे के लिए काम करते हैं। सर्वेवाले किसी की जमीन हड़पने की येाजना तो नही बना रहे हैं ना ही किसी आदमी के खेत–खलिहान आदि की जमीन लि जाएगी। इस प्रकार सभी गांव वालो के समझाने से उसको शान्ति मिली और अन्ततः जाकर उसने हमारा लेवलिंग स्टाफ हमें वापस कर दिया। हमनें वहां का बाकी सर्वेक्षण कार्य पूर्ण किया और वह रात शिविर में ही बितायी। पहॅचे। सभी सदस्य खुश थे कि हमने इस गांव में अपना कार्य पूरा कर लिया।

ऐसे अनेक किस्सें हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि सर्वेक्षण का कार्य इतना चुनौतियों भरा होता है, जिसे सफलतापूर्वक करके जो सन्तोष मिलता हैं वह अन्यत्र नहीं।

मार्क आगस्टीन,
अधिकारी सर्वेक्षक
(सेवानिवृत)
आर.जी.डी.सी.जयपुर

व्यसन और स्वास्थ्य

मनुष्य जीवन परमपिता परमेश्वर की दी हुई अनुपम भेंट हैं। इस जीवन को संवाराना अथवा इसे विकृत करना मनुष्य के हाथ में है, यह उसकी स्वतंत्रता हैं।

मानव शरीर का शिशु अवस्था में इस संसार में आगमन होता हैं। माता–पिता उसका पालन–पोषण करते हैं और उनकी देख रेख में बच्चे का विकास होता है। माता– पिता, परिवार के अन्य सदस्यों तथा आस पास के वातावरण का उसके बचपन और किशोरावस्था में बहुत प्रभाव पडता है। माता–पिता और परिवार के सदस्य यदि व्यसनों से ग्रसित हैं, तो बच्चें जाने अनजाने में उनकी आदतों का अनुकरण करते हैं। इसलियें अपनें बच्चों के लिए ही सही, माता–पिता को व्यसनों से दूर रहना चाहिए।

यह सर्व विदित हैं कि धूम्रपान करना, गुटखा तम्बाकू खाना, मंदिरा एवं अन्य मादक द्रव्यों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और विषतुल्य हैं। इनके सेवन से केंसर, टी.बी. जैसी जानलेवा बीमारियां हो जाती है। तथापि कई शिक्षित और अशिक्षित लोग ये आदतें अपनाऐं हुए हैं। लोग इस शरीर को कचरा पात्र समझ कर जब चाहा गुटखा या तम्बाकू अंदर डाल दी, बीडी–सिगरेट से धुआ अंदर खींच लिया अथवा मदिरा गटक ली। इन सबका घाल मेल शरीर में कितनी सडन और बदबू फैलाता होगा, कल्पना से परे हैं।

यह तो अपना, सब का अनुभव हैं कि बस अथवा रेल यात्रा के दौरान अगर कोई व्यक्ति मदिरापान किया हुआ, गुटखा खाता हुआ या धुमपान कर रहा हो तो कितनी बदबू आती हैं, जी मिचलाता हैं और कभी कभी तो किसी को वमन तक हो जाती है। इसके अलावा इनके सेवन से समय, धन और स्वास्थ्य की हानि तो हैं ही। अतः इनको त्यागना ही श्रेष्ठकर हैं।

अगर जीवन में ताजे सुगंधित और सुन्दर फूलों की महक भरनी हैं, ताजे फलों का रसास्वादन करना हैं तथा स्वस्थ शरीर और अच्छे स्वास्थ्य की कामना हैं तो इन व्यसनों– धुम्रपान, तम्बाकू, गुटखा, मदिरापान और अन्य मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना ही श्रेष्ठ हैं।

स्वस्थ शरीर, अच्छा स्वास्थ्य – सुखी जीवन का आधार

हीरालाल गर्ग
सर्वेक्षण सहायक
(सेवा–निवृत)

हिन्दी प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह

राजस्थान की धरोहर